कार्यालय प्राचार्य, शासकीय लाहिड़ी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
चिरमिरी, जिला–कोरिया (छ.ग.)
नैक द्वारा "C" ग्रेड प्रदत्त
Affiliated to Sant Gahira Guru University, Ambikapur Phone No. 07771-265026
Email-govtlahiricollege@gmail.com AISHE: C-9736 Website- www.govtlahiripgcollege.com

AQAR: 2021-22

3.3.2 - Number of research papers per teachers in the Journals notified on UGC website during the year

Sl. No.	Contents	Page (From-to)
1	Report of published research paper per teacher	02-03
2	Scan copy of the research article	04-31

IQAC Coordinator

IQAC Coordinator
Govt. Lahiri P.G. College, Chirimiri
Distt. - Korlya (C.G.)

Principal

Govt. Lahiri P.G. College
Chirimiri, Distt.- Korea (C.G.)

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय लाहिड़ी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
चिरमिरी जिला–कोरिया (छ.ग.)
नैक द्वारा "C" ग्रेड प्रदत्त
Affiliated to Sarguja University, Ambikapur AISHE: C-9736 Phone No. 07771-265026
Email-govtlahiricollege@gmail.com Website- www.govtlahiripgcollege.com

Report of research papers published per teacher in the Journals notified on UGC website during the year:

Session: 2021-22

Sl. No.	Title of paper	Name of the author/s	Department of the teacher	Name of journal	ISSN number
1	दोपहर का भोजनः मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ	डा. राम किंकर पाण्डेय	हिन्दी	शोध सृजन	Nil
2	राम नरेश त्रिपाठी का काव्य वैविध्य			शोध सृजन	Nil
3	विस्थापन की त्रासदी का महावृत्तांतः डूब			शोध संचार बुलेटिन	2229-3620
4	नई कहानी आंदोलन के अंतः सूत्रों की पड़ताल			शोध धारा	0975-3664
5	धर्मवीर भारती का साहित्य चिंतन			शोध दिशा	0975-735 X
6	भीष्म साहनी का औपन्यासिक अवदान			समसामयिक सृजन	2320-5733
7	मुक्ति बोध की कहानियॉः वैचाारिक के कलेवर में आख्याान			समसामयिक सृजन	2320-5733
8	हिन्दी कथा साहित्य और आलोचनाः विधात्मक स्वरूप की पहचान			शोध दिशा	0975-735 X
9	राष्ट्रीय चेतना के प्रखर संवाहक मैथिलीशरण गुप्त			समसामयिक सृजन	2320-5733
10	भक्ति आंदोलन में मराठी एवं गुजराती संतो का प्रदेय			शोध दिशा	0975-735 X
11	Study of effect of Magnetic Clouds Geomagnetic Indices during period 2007	Mr. S.C.Chaturvedi	Physics	Asian basic and applied research journal	168-171
12	Correlative Study of Interplanetary Magnetic Field (IMF) with Solar Indices during period 2008-2020			Indian journal of research	2250-1991

13	The Solar-Terrestrial Links and Energy Transfer Mechanism in Recurrent and Non-recurrent Geomagnetic Activities and Impacts of Solar Plasma on Earth's	Mr. S.C.Chaturvedi	Physics	International Journal of Research in Engineering and Science	2320-9364
14	The geomagnetic field variations Morphology of Geomagnetic Storms and distribution of Plasma in the Magnetosphere			International Journal of Creative Research Thoughts	2320-2882
15	Race and gender marginalization in Toni Morrison's the bluest eye	Dr Aradhana Goswami	English	Journal of literature, culture and media studies	0974-7192
16	Human Rights in India: The Constitutional Framework	Dr. Ashish Kumar Pandey	Commerce	JICR Journal	0022-1945
17	Impact of labour welfare practices on employees' satisfaction			Shodh Sarita	2348-2397
18	Synthesis, Molecular Docking, and Biological Evaluation of Schiff Base Hybrids of 1,2,4-Triazole-Pyridine as Dihydrofolate Reeducates Inhibitors	Dr. Dhansay Dewangan	Chemistry	Current Research in Pharmacology and Drug Discovery	2590-2571

IQAC Coordinator

IQAC Coordinator
Govt. Lahiri P.G. College, Chirimiri
Distt. - Korlya (C.G.)

Principal

Principal
Govt. Lahiri P.G. College
Chirimiri, Distt.- Korea (C.G.)

दोपहर का भोजन: मध्यवर्गीय जीवन का आख्यान

डॉ. राम किंकर पाण्डेय

अमरकांत हिन्दी कथा साहित्य के उन विरले कथाकारों में से हैं जिन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से मध्यवर्गीय जीवन का जीवंत आख्यान प्रस्तुत किया है। वे नयी कहानी आंदोलन के दौर के महत्त्वपूर्ण कहानीकार हैं । उनकी कहानियों में मध्यवर्ग के दारुण यथार्थ और जिजीविषा, घनीभूत पीड़ा और जीवन संघर्ष का अंतरंग चित्रण मिलता है। इस संबंध में डॉ. नामवर सिंह ने कहा है -''अमरकांत ने अपनी कहानियाँ यहीं से उठायी हैं और इस तरह हमारी आँखों में हमारी ही जिन्दगी के जाने कितने पर्दे उठ गए हैं। इस क्षेत्र में अमरकांत की कहानियाँ किसी भी नए लेखक के लिए चुनौती हैं।'' उनकी कहानियों का कथानक और उसकी शैली सहज और स्वाभाविक होती है, कथा की बुनावट जीवन-संघर्ष के नजदीक और यर्थाथ से संपृक्त होती है। उनकी प्रसिद्ध कहानियों 'डिप्टी कलक्टरी', जिन्दगी और जोंक', 'मकान', 'दोपहर का भोजन', आदि ऐसी कहानियाँ हैं जो जीवन की जटिलताओं को समेटते हुए उसके समग्र यथार्थ का उद्घाटन करती हैं।

'दोपहर का भोजन' कहानी का प्रकाशन 1956 ई. में हुआ था और हिन्दी कहानी में यह दौर नयी कहानी का था साथ ही भारत के सामाजिक और राजनीतिक वातावरण में यह समय मोहभंग का भी था। आजादी के बाद का पहला और दूसरा दशक मध्यवर्ग के लिहाज से मोहभंग का ही समय था। यह मोहभंग के देश के स्वाधीनता संघर्ष के दौरान देखे गए उन सपनों का था, जिनके पूरे होने की उम्मीद देशवासी लगाए हुए बैठे थे। लेकिन तत्कालीन नीतियों के कारण वे सपने पूरे नहीं हो सके थे और अधिकांश देशवासी अपने को ठगा सा महसूस कर रहे थे। नयी कहानी के कहानीकारों ने इस मोहभंग, घुटन, संत्रास, पीड़ा और संघर्ष को अपनी कहानियों में यथार्थ रूप में चित्रित किया है।

अमरकांत की कहानी 'दोपहर का भोजन' मध्यवर्ग की टूटन, घुटन गरीबी, संत्रास और बेरोजगारी से उपजी पीड़ा की दारुण और दुखद स्थितियों की सघन अभिव्यक्ति है। 'दोपहर का भोजन' कहानी आकार में छोटी है,लेकिन अपने प्रभांव और सघनता में बड़ी है। वास्तव में यह एक बड़े फलक की कहानी है, कथा के माध्यम से लेखक मध्यवर्गीय परिवार की लाचारी और स्त्री की दुखभरी कथा को भी उठाता है। सिद्धेश्वरी के माध्यम से लेखक यह बताने की कोशिश करता है कि मध्यवर्गीय परिवार में सर्वाधिक दुख स्त्री को ही भुगतना पड़ता है। इसकी पुष्टि कहानी के आरंभ में ही इस कथन से होती है -''सिद्धेश्वरी ने खाना बनाने के बाद चूल्हे को बुझा दिया और दोनों घुटनों के बीच सिर रखकर शायद पैर की अंगुलियों या जमीन पर चलते चींटे-चींटियों को देखने लगी। अचानक उसे मालूम हुआ कि बहुत जोर से उसे प्यास लगी है, वह मतवाले की तरह उठी और गगरे से लोटा भर पानी लेकर गट-गट चढ़ा गयी। खाली पानी उसके कलेजे में लग गया और वह 'हाय राम' कहकर वहीं जमीन पर लेट गयी।'' यहाँ पता चलता है कि सिद्धेश्वरी किस कदर बेबस और किंकर्तव्यविमूढ़ है। सिद्धेश्वरी की स्थिति देखकर हमें उसके पूरे परिवार की हालत का पता चल जाता है। भूख से वह व्याकुल है इसलिए एक लोटा पानी पीकर रह जाती है। कमजोरी के कारण वह मतवाले की तरह चलती है। यहाँ इस बात की पुष्टि भी होती है कि जब वह पानी पीती है, तो पानी उसके कलेजे में लग जाता है और वह दर्द से बेहाल होकर वहीं निढ़ाल होकर लेट जाती है।

Scanned by CamScanner

अनुक्रम

संपादकीय 3

प्रेमचन्द और फ़िल्म साहित्य एक समीक्षात्मक अध्ययन ▪ डॉ. लता अग्रवाल 5

अभिषेक त्रिपाठी की कविताएँ ▪ कालां जादू 10

कोरोना- एक प्रेम गाथा ▪ डा .महिमा श्रीवास्तव 11

पर्यावरण ▪ रामदरश मिश्र 13

ज़हीर कुरेशी की ग़ज़लों में बीसवीं सदी के नारी-मन की खुलती किताब ▪ डॉ. मधुकर खराटे 14

पार्थक्य ▪ अमित कुमार 18

प्रवासी हिन्दी साहित्य में भारतीय संस्कृति ▪ डॉ. (श्रीमती) काकोली गोराई 21

भारतेंदु और नए ज़माने की मुकरियाँ ▪ डॉ० सुनीता साव 23

आत्मकथ्य: मैं और मेरी बाल कविताएँ ▪ प्रकाश मनु 26

रामनरेश त्रिपाठी का काव्य वैविध्य ▪ डॉ. राम किंकर पाण्डेय 36

कविता ▪ लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता 41

समकालीन हिन्दी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर भीष्म साहनी ▪ डॉ. एस. ए. मंजुनाथ 42

साध्वी मीराबाई की मर्दानगी ▪ अक्षय चैतन्य 46

लाल सिंह: सांस्कृतिक चेतना का मुख्य स्वर शोध-सृजन निर्माण
की संस्कृति का वाहक शोध-सृजन: शैलेश सिंह ▪ मधुरिमा भट्टाचार्जी 51

पाहुड़दोहा: अपभ्रंश का जैन रहस्यवादी काव्य ▪ डॉ. अभिजीत भट्टाचार्य 53

शोध-सृजन - समीक्षा-दिसंबर, 2020 ▪ डॉ. रेशमी पांडा मुखर्जी 64

यह प्रेम कथा नहीं है ▪ शाश्वत रतन 65

विवेकानंद के दर्शन के आलोक में निराला की कविताएँ ▪ डॉ. सुनील कुमार 71

सर विलियम जोंस की 275 वीं सालगिरह
साहित्य की वैज्ञानिक अर्थवत्ता संदर्भ ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य ▪ राम आह्लाद चौधरी 78

Scanned by CamScanner

रामनरेश त्रिपाठी का काव्य वैविध्य

डॉ. राम किंकर पाण्डेय

बहुमुखी प्रतिभा के धनी समर्थ रचनाकार पंडित राम नरेश त्रिपाठी का रचना काल पचास वर्ष की कालावधि में फैला हुआ है। उन्होंने इस दौरान साहित्य की विविध विधाओं में अधिकार पूर्वक रचनाएँ की है। त्रिपाठी जी कवि, कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार, कोशकार, टीकाकार, आलोचक,सम्पादक, चरित लेखक, व्यंग्य लेखक, बाल साहित्यकार, शिक्षण साहित्य लेखक, इतिहास लेखक, सूक्तिकार, वैयाकरण एवं भाषाविद, यात्रा वृत्तांतकार के साथ-साथ संगीत, विज्ञान, अनुवाद, संस्कृति, राजनीति एवं ग्राम्य गीतों के संकलनकर्ता और लेखन मोर्चे पर आजीवन तैनात रहे। द्विवेदी युग और छायावाद के संधि-स्थल पर खड़े त्रिपाठी जी खड़ी बोली को काव्य भाषा के रूप में सजाने संवारने वालों में अग्रगण्य रहे हैं। आलोचक डॉ. धीरेन्द्र वर्मा अपनी पुस्तक 'आधुनिक हिन्दी काव्य' में लिखते हैं - ''अतः साहित्य के जितने अंगों पर त्रिपाठी जी ने रचना की है उतने अंगो पर साहित्य के किसी लेखक की लेखनी ने काम नहीं किया है। इस क्षेत्र में त्रिपाठी जी अद्वितीय हैं।''1 जब हम त्रिपाठी जी के रचना-संसार पर दृष्टि डालते हैं तो देखते हैं कि उनके रचनाकार का कवि रूप हमारे सामने सर्वाधिक मुखरित होकर आता है। उन्होनें अपनी रचनाओं के माध्यम से देश-प्रेम की भावना का प्रसार करने के साथ-साथ सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक चेतना के प्रसार का भी कार्य किया है।

त्रिपाठी जी की प्रकाशित काव्य कृतियों में मिलन (1917ई.), पथिक (1920 ई.) और स्वप्न (1928 ई.) चर्चित रहे हैं। उन्होंने अपने इन तीनों खंड काव्यों की य पृष्ठभूमि पर ही किया है। 'मिलन' एक तरह से रा य जागरण का स्वर मुखरित करता है। उसका कथानक तत्कालीन राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ता है। इसमें चित्रित विदेशी शासक और क्रूर कर्मचारियों के अत्याचार की छवि हम अंग्रेजी शासन में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। एक तरह से मिलन में स्वतंत्रता पूर्व भारत के यथार्थ की झांकी हम देख सकते हैं। नायक आनंद कुमार और पत्नी विजया का देश भ्रमण और देशवासियो में जन जागृति का प्रसार करने की भावना में महात्मा गॉधी का प्रभाव स्पष्ट है। 'मिलन' का कथानक कुछ इस तरह से बुना गया है जिसमें हमें तत्कालीन स्वाधीनता संघर्ष और उसके परिणाम का पूर्वाभास दिखाई देता है। नायक आनंद कुमार और उसकी पत्नी विजया के परिश्रम स्वरूप जनता में विद्रोह की भावना का उदय होता है, राजा और प्रजा के बीच भयानक संघर्ष होता है जिसमें साधु की मृत्यु होती है और विदेशी शासक भाग जाते हैं। विदेशियों का पलायन और गुलामी से मुक्ति का सपना त्रिपाठी जी अपनी इस रचना में देखते हैं। 1917 ई. में लिखी हुई रचना में हम 1947 ई. का पूर्वानुमान स्पष्टतः देख सकते हैं। 'पथिक' में भी कर्मशील नायक का संघर्ष शुभ का संदेश लेकर आता है और प्रजातंत्र की स्थापना होती है। स्वप्न में भी विदेशी आक्रमणकारियों को प्रत्युत्तर देने की कहानी है। 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' में आचार्य रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं - ''मिलन, पथिक और स्वप्न नामक इनके तीनों खंड काव्यों में इनकी कल्पना ऐसे मर्म पथ पर चली है, जिस पर मनुष्य मात्र का हृदय स्वभावतः ढलता आया है।''2

राम नरेश त्रिपाठी की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना के विविध रूप हैं। परम्परागत देश-प्रेम उनकी कविता में बड़ी सजगता के साथ उद्घाटित हुआ है। उनकी कविता में चल रहे राष्ट्र संघर्ष की ओजस्विनी वाणी मिलती है, सत्य और अहिंसा के लिए प्राणों के बलिदानियों की अमरगाथा मिलती है। राष्ट्रीय कविता की समस्त विधाओं को समेटती हुई उनकी कविता कुछ मूल समस्याओं पर ही विचार करती है। उनके काव्य में देशप्रेम, राष्ट्रीय जागरण एवं स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति सम्मान, विदेशी शासन की आलोचना तथा सांस्कृतिक गौरव का मुखर गान आदि की सहज अभिव्यक्ति देखी जा सकती है। राष्ट्रीयता की उत्ताल तरंगो से तरंगायित हृदय के इस महाकवि ने मिलन, पथिक, स्वप्न और अन्य स्फुट संग्रहों के माध्यम से भी विदेशी शासन का डटकर विरोध करते हुए सजग रहने का मूल मंत्र दिया है -

Scanned by CamScanner

40.	उच्च शिक्षा में युवा असंतोष : (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)	प्रतिभा पन्त प्रो0 इला साह	173
41.	वेबसीरीज में प्रदर्शित सेक्स एवं हिंसा का युवाजन पर प्रभाव : एक अध्ययन	डॉ0 प्रतिभा शर्मा	178
42.	भारतीय ऑटोमोबाइल उद्योग में लाभांश नीति की निगमित लाभदायकता पर प्रभाव : भारत में चयनित ऑटोमोबाइल उद्योग का विश्लेषणात्मक अध्ययन	पुनीत कुमार कनौजिया	182
43.	हरियाणा पंचायतीराज में महिलाएं : चुनौतियाँ एवं संभावनाएं	राजकुमार यादव	188
44.	इक्कीसवीं सदी में संस्कृत–वाङ्मय से अपेक्षाएँ एवं चुनौतियाँ	डॉ0 उषा नागर	191
45.	दूतकाव्य परम्परा में 'पत्रदूतम्' का वैशिष्ट्य	महासिंह सोढ़ा डॉ0 हरमल रेबारी	195
46.	विस्थापन की त्रासदी का महावृत्तांत – डूब	डॉ0 राम किंकर पाण्डेय	201
47.	बस्तर के जनजाति आर्थिक जीवन में पारम्परिक जनजाति बाजार की प्रासंगिकता : शोध साहित्य की समाजशास्त्रीय समीक्षा	कविता यदु डॉ0 निस्तर कुजूर	204
48.	इतिहास लेखन में बक्सर जिला की प्राचीनता	मंदीप कुमार चौरसिया	208
49.	विवाहित कामकाजी महिलाओं की समस्याएं : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (लखनऊ जिले की शिक्षिकाओं के विशेष सन्दर्भ में)	रूचि यादव	211
50.	भारत में एफ0एम0सी0जी0 कम्पनी की लाभदायकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन : चयनित एफ0एम0सी0जी0 कम्पनी के सन्दर्भ में	पुनीत कुमार कनौजिया	216
51.	भारत में आरक्षण नीति	डॉ0 गिर्राज प्रसाद बैरवा	222
52.	हिंदी डायरी साहित्य : लेखकों का जीवन संघर्ष	ममता चौधरी	226
53.	अमृतराय के उपन्यासों में विविध आयाम	शिवराम मीणा	230
54.	महर्षि दयानन्द का यज्ञचिन्तन	डॉ0 सुधीर कुमार शर्मा	234
55.	कालिदास का सौन्दर्य सन्निवेश	डॉ0 स्नेहलता शर्मा	238
56.	डॉ. जगदीश गुप्त के काव्य में शिल्प सौन्दर्य	अरविन्द वर्मा	243
57.	सिनेमा में नारी मुक्ति संघर्ष	ममता सैनी	247
58.	स्त्री–विमर्श : वैदिक युग से वर्तमान तक	डॉ0 सतीश कुमार पांडेय	251
59.	शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में स्त्री–पुरुष पात्रों का अनुशीलन	कमलेश चौधरी	254
60.	सुशीला टाकभौरे की कहानियों में दलित जीवन की समस्याएं और संघर्ष	अनिता रानी	257
61.	'बंग महिला' की कहानियों में स्त्री–चेतना	डॉ0 श्रुति शर्मा	259

Scanned by CamScanner

ISSN - 2229-3620
UGC CARE LISTED JOURNAL
शोध संचार बुलेटिन
January-March, 2021
Vol. 11, Issue 41
Page Nos. 201-203
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

विस्थापन की त्रासदी का महावृत्तांत - डूब

डॉ0 राम किंकर पाण्डेय*

शोध सारांश

वीरेन्द्र जैन कृत उपन्यास 'डूब' विस्थापन की त्रासदी का महावृत्तांत है। इसका प्रकाशन सन् 1991 ई. में हुआ था। इसमें मध्यप्रदेश के एक पिछड़े क्षेत्र की विस्थापन की समस्या को वृहत्तर संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। आजाद भारत में विभिन्न बिजली परियोजनाओं के माध्यम से एक बड़ी आबादी का विस्थापन हुआ है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखक उस क्षेत्र में बिजली परियोजना के माध्यम से 'डूब' क्षेत्र में आने वाली आबादी की पीड़ा का यथार्थ अंकन किया गया है। 'डूब' में चित्रित 'लड़ैई' गाँव प्रतीक बनकर उभरता है उन गांवों का जो इस तरह की विकास परियोजनाओं की भेंट चढ़ जाते हैं। उपन्यासकार ने उपन्यास में किसानों और ग्रामीणों के शोषण का यथार्थ चित्रण किया है। अपने वोट बैंक के जुगाड़ में नेता और राजनीतिक दल किस तरह के षड्यंत्र रचकर ग्रामीणों को धोखा देते हैं यह उपन्यास में बखूबी चित्रित हुआ है। राजनीतिक नेताओं के साथ मिलकर प्रशासनिक अधिकारी भी ग्रामीणों को मिलने वाली मुआवजे की राशि को हड़पने के लिए तैयार बैठे रहते हैं। वास्तव में यह उपन्यास विकास परियोजनाओं से विस्थापित होने वाले समूहों की विडम्बनात्मक और त्रासदी पूर्ण जीवन का महावृत्तांत हमारे सामने प्रस्तुत करता है।

Keywords : डूब, ग्रामीण, विस्थापन, उपन्यास, परियोजना, शोषण

वीरेन्द्र जैन हिन्दी के उन उपन्यासकारों में शामिल हैं जो सदैव जन सरोकारों से जुड़े रहते हैं। उनकी औपन्यासिक परिधि बहुत विस्तृत है। आलोच्य उपन्यास 'डूब' से पहले उनके कई उपन्यास प्रकाशित हो चुके थे, लेकिन एक सफल उपन्यासकार के रूप में उनकी ख्याति 'डूब' के प्रकाशन से ही हुई। 'डूब' मध्यप्रदेश के एक पिछड़े क्षेत्र की पीड़ा को सशक्त और मजबूत ढंग से हमारे सामने प्रस्तुत करता है। 'डूब' में चित्रित 'लड़ैई' गाँव भारत के अन्य गाँवों की तरह ही पिछड़ेपन का प्रतीक है। गाँव वालों का निरंतर शोषण व्यवस्था के द्वारा किया जा रहा है। विकास से कोसों दूर यह गाँव सभी सुविधाओं से दूर और अभावग्रस्तता में जी रहा है। गाँव में ऊँची जातियों द्वारा गरीब किसानों का शोषण एक तरफ बदस्तूर जारी है तो दूसरी ओर साहूकारों द्वारा भी वे लगातार ठगे जा रहे हैं। उपन्यासकार ने इन तमाम स्थितियों का वर्णन उपन्यास में विस्तार से किया है।

'लड़ैई' गाँव के बारे में बताते हुए लेखक कहते हैं कि इस गाँव का इतिहास बहुत समृद्ध रहा है। इसका संबंध भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से भी जुड़ता है। पहले इस जगह घना जंगल हुआ करता था, 1857 ई. की लड़ाई के बाद लोगों ने यहाँ अपना डेरा डाला तो इस गाँव का अस्तित्व सामने आया। गाँव की परंपरा बहुत समृद्ध रही है, यहाँ अतिथियों का स्वागत दिल खोल कर किया जाता रहा है, लेकिन आज स्थितियाँ बदल रही हैं। गाँव की इस समृद्ध विरासत पर बात करते हुए लेखक बताते हैं –"कण–कण में बसे भगवान के वे अंश जब यह स्थान खाली कर गए तब बसा यहाँ गुरीला। वहाँ बसा सिद्धपुरा। बाद में लड़ाई के सताए इतने लोग आ गए यहाँ। उन्होने यहाँ बस कर हमारा मान बढ़ाया, इसलिए हमारे तुम्हारे पूर्वजों ने उनकी कृपा को उस उदारता को हमेशा याद रखने की खातिर अपने गाँव का नाम गुरीला से बदलकर रख दिया लड़ैई।"[1] इस तरह से गाँव के समृद्ध इतिहास को सामने रखकर लेखक पाठकों को गाँव से जोड़ने का प्रयास करता है। स्वतंत्र भारत में जिस तरह से विकास का मॉडल गढ़ा गया वह जनता की उम्मीदों के ठीक विपरीत रहा है। विस्थापन की समस्या ऐसे ही विकासवादी माडल का परिणाम रही है। देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने बेतिया नदी पर राजघाट बाँध परियोजना का स्वप्न देखा था। यह परियोजना रूस के सहयोग से पूरी होने वाली थी। 'लड़ैई' गाँव इस परियोजना के डूब क्षेत्र में आ गया था। गाँव वालों को विस्थापन का दंश झेलना पड़ता है। मुआवजे के लेन–देन में सरकारी महकमे द्वारा भारी खेल किया जाता है। उपन्यास गाँव वालों के दुख–दर्द को पूरी सच्चाई से बयान करता है। उपन्यास का एक पात्र माते कहता है –"लबरी है जा सरकार, महालबरी, झूठी महाझूठी।" आजादी के बाद से ही भारत के गाँव हमारे नेताओं और उनके दलाल वर्ग द्वारा वोट बैंक की राजनीति के

*सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) शासकीय लाहिड़ी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चिरमिरी, जिला – कोरिया (छ0ग0)

Scanned by CamScanner

ISSN : 0975-3664

RNI : U.P.BIL/2012/43696

शोध धारा
SHODH-DHARA

कला और मानविकी का त्रैमासिक, पीयर रिव्यूड, रेफर्ड एवं यूजीसी केयर लिस्टेड शोध जर्नल (साहित्य, कला और संस्कृति पर केंद्रित)
(A quarterly peer reviewed, referred, U.G.C. care listed reseach journal of Art & Humanities)

Year 2021 **March** **Vol. 1**

अनुक्रम Contents

शीर्षक	लेखक	पृ०सं०
शोध आलेख		1-167
✦ हिन्दी साहित्य		
१. भूमंडलीकरण और समकालीन हिंदी कविता	डॉ. शिवजी उत्तम चवरे	1-6
२. 'आज बाज़ार बन्द है' : वेश्यामुक्ति की पहल	डॉ. मिनी जोर्ज	7-12
३. आधुनिक हिन्दी कविता में अंतर्विषक संदर्भ	डॉ० मनोज कुमार स्वामी	13-17
४. शिवमूर्ति के 'कुच्ची का कानून' में प्रतिबिंबित ग्रामीण चेतना	डॉ० उमा देवी	18-22
५. कंचन सेठ की कविताओं में सामाजिक यथार्थ	डॉ० गोरखनाथ तिवारी	23-26
६. स्त्री अस्मिता की आदर्श कथाकार कमल कुमार	डॉ० शशिकांत मिश्र	27-33
७. भाषा : एक विमर्श	डॉ० अम्बिका उपाध्याय	34-40
८. तमस उपन्यास में देश विभाजन की त्रासदी	विनोद कुमार मौर्य	41-47
९. पर्यावरणीय संकट के संदर्भ में राजेश जोशी तथा ज्ञानेन्द्रपति की चिंता (भू–पर्यावरण के विशेष संदर्भ में)	डॉ० सुनीता शर्मा निम्रता	48-56
१०. लीलाधर जगूड़ी के काव्य 'नाटक जारी है' में राजनीतिक चेतना	डॉ० विवेकानन्द पाठक	57-64
११. ब्रज का लोकसाहित्य	डॉ० सूर्यकान्त त्रिपाठी	65-70
१२. बुन्देली लोक काव्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना	सर्जना यादव	71-75
१३. हिंदी और मराठी की गज़ल में सामाजिक विषमता की सशक्त अभिव्यक्ति	डॉ० नवनाथ गाड़ेकर	76-80
१४. देहरी से देह तक पहुँचती : शैलजा पाठक की 'कमाल की औरतें'	डॉ० नीतू परिहार	81-87
१५. परम्परागत ढाँचे से पृथक स्वातंत्र्योत्तर भारत के जीवन का जीवंत दस्तावेज : 'राग दरबारी'	ज्ञानेन्द्र मणि त्रिपाठी	88-92
१६. नई कहानी आंदोलन के अंतः सूत्रों की पड़ताल	डॉ० राम किंकर पाण्डेय	93-98
१७. २१वीं सदी में मीडिया और हिन्दी का वैश्विक विस्तार	डॉ० अरूण कुमार चतुर्वेदी	99-103
१८. इक्कीसवीं शताब्दी के नवगीत में स्त्री विमर्श के विविध आयाम	सीमा यादव	104-108
१९. 'एक न एक दिन' : रिश्तों के मर्म पर अर्थतंत्र का निर्मम	मृत्युंजय सिंह	109-116

Scanned by CamScanner

हिन्दी साहित्य

ISSN : 0975-3664, RNI : U.P.BIL/2012/43696
SHODH-DHARA ; Mar 2021; Vol. 1; P. 93-98

नई कहानी आंदोलन के अंतः सूत्रों की पड़ताल

डॉ० राम किंकर पाण्डेय

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, शासकीय लाहिड़ी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, **चिरमिरी, कोरिया, छ०ग०**

(प्राप्त : १ दिसंबर २०२०)

Abstract

हिन्दी कहानी की विकास यात्रा में 'नई कहानी आंदोलन' अत्यंत महत्वपूर्ण है। सन् १९५० ई. के आसपास हिन्दी कहानी के शिल्प और संरचना में परिवर्तन दिखाई देने शुरू होते हैं। इसकी नव्यता को पहचान कर इसे 'नई कहानी' की संज्ञा से अभिहित करने का काम कवि दुष्यंत कुमार ने 'कल्पना' पत्रिका के जनवरी १९५५ के अंक में किया था। कहानी के नए सरोकारों और प्रयोगधर्मिता को लेकर डॉ. धर्मवीर भारती ने 'धर्मयुग' में कहानी के बदले हुए स्वरूप को रेखांकित करते हुए मोहन राकेश, कमलेश्वर और राजेन्द्र यादव को नई कहानी आंदोलन के त्रिकोण के रूप में स्थापित किया था। वास्तव में नई कहानी का आग्रह नएपन पर है। इस नएपन के आधार पर उसने अपने को पूर्ववर्ती कहानी से अलगाया है। दरअसल नए कहानीकारों ने यह महसूस किया कि वैचारिक स्तर पर यह मूल्यों के विघटन का दौर है। इस दौर में मोहभंग, अविश्वास, संदेह, भय और आशंका के व्यापार ने आदर्शवाद की सुखद कल्पनाओं से लोगों को अलग कर दिया था। नई कहानी ने संयुक्त परिवार के विघटन, नए शहरी मध्यवर्ग के उदय और पूंजी के बढ़ते वर्चस्व के कारण बढ़ती आर्थिक–सामाजिक विषमता को खासतौर से रेखांकित किया। साथ ही नये मनुष्य, नये दृष्टिकोण, नई संवेदनाओं, नए यथार्थ और नए संदर्भों के चित्रण के लिए नई कहानी को नवीन शिल्प की भी खोज करनी पड़ी।

Figure : 00 References : 16 Table : 00

Key Words : कहानी, नई कहानी, आंदोलन, नई कहानी की विषय भूमि, नई कहानी के अंतः सूत्र।

आमुख :- हिन्दी कहानी के इतिहास में 'नई कहानी' आंदोलन का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। बीसवीं शताब्दी के छठें दशक के मध्य से लेकर सातवें दशक के मध्य तक वह हिन्दी साहित्य की चर्चा के केन्द्र में रही है। उसको लेकर जितना वाद विवाद, चर्चा–परिचर्चा और उठा–पठक हुई थी, उतना किसी दूसरी साहित्यिक विधा को लेकर कभी नहीं हुआ। सर्वाधिक विवाद तो इस आंदोलन के प्रारंभ को लेकर ही रहा है। जहाँ एक ओर कुछ आलोचक और कहानीकार १९५१ के दशक को 'नई कहानी' के दशक के नाम से अभिहित करते हैं तो वहीं दूसरी ओर कतिपय कहानीकार और आलोचक इसकी अंतिम समय–सीमा सातवें दशक के पूर्वार्द्ध तक ले जाते हैं। कमलेश्वर, मार्कण्डेय, दुष्यंत कुमार, मोहन राकेश और राजेन्द्र यादव जैसे लेखक नई कहानी का आरम्भ १९५० ई. के आसपास मानते हैं। जबकि डॉ. गोपाल राय का कहना है कि "तथ्य यह है कि नई कहानी का आंदोलन 'आंदोलन' के रूप में छठें दशक के अंत में आरम्भ हुआ और सातवें दशक के लगभग मध्य में समाप्त हो गया। १९५५ तक तो उसका नाम–निशान भी नहीं था।"[१] कुछ इसी तरह का मत आलोचक नामवर सिंह का भी है। नामवर सिंह ने कहानी के जनवरी १९५६ ई. के अंक में प्रकाशित लेख 'आज की हिन्दी कहानी' में कहा था कि 'नई कहानी' नाम से कोई आंदोलन अभी तक नहीं चला है।"[२] लेकिन इसका मतलब कतई नहीं है कि हिन्दी

Scanned by CamScanner

नारी-व्यथा की कथा प्रभा खेतान के 'छिन्नमस्ता' उपन्यास के विशेष संदर्भ में/ **डॉ॰ मनोहर आप्पासो जमदाडे** 286
परंपरा तथा आधुनिकता के समन्वयक : आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी/ **प्रतिभा झा** 290
मधु काँकरिया के उपन्यास 'सेज पर संस्कृत' में धर्म व नारी-चेतना/ **रानी देवी** 295
दलित विमर्श : अवधारणा और स्वरूप/ **रविन्द्र कुमार** 299
प्रगतिशील हिंदी कविता में व्यंग्य सरंचना/ **रेश्मा एम एल** 303
अमरकांत की कहानियों में मानवमूल्य/ **डॉ॰ सुनीता अवस्थी** 309
समकालीन महिला कथालेखिकाओं के लेखन में स्त्री-परिवेश/ **डॉ॰ दिग्विजय टेंगसे** 316
भारत में लोकतंत्र : दशा एवं दिशा/ **डॉ॰ विजय प्रकाश** 320
उत्तराखंड के अभिशप्त और उपेक्षित वर्ग की गाथा—कगार की आग/ **डॉ॰ मुक्तिनाथ यादव** 327
स्वच्छंदतावाद की अवधारणा और उसकी प्रमुख विशेषताएँ/ **प्राची तिवारी** 332
अनुच्छेद-21 जीवन का अधिकार और आदिवासी कविताएँ/ **डॉ॰ श्रीमती राजु एस॰ बागलकोट** 338
केदारनाथ सिंह की कविताओं में लोकसौंदर्य/ **उमेश कुमार पर्वत** 343
मंगलेश डबराल की काव्य संवेदना/ **डॉ॰ नवनाथ शिंदे** 347
मीराबाई और हिंदी का स्त्री-विमर्श/ **डॉ॰ दीप कुमार मित्तल** 353
बीपीएल परिवारों में रहने वाले वृद्धजनों की सामाजिक-आर्थिक समस्याओं का एक अध्ययन/ **डॉ॰ श्याम सिंह, डॉ॰ संजीव कुमार लवानियां** 359
आज के समय की हिंदी कहानी/ **वीरेश कुमार** 366
आदिवासी जीवन और संस्कृति/ **सपना रानी** 372
किन्नर जीवन का संघर्ष : पोस्ट बॉक्स नं॰ 203 नाला सोपारा/ **डॉ॰ अशोक शामराव मराठे** 375
धर्मवीर भारती का साहित्य-चिंतन/ **डॉ॰ राम किंकर पांडेय** 381

Scanned by CamScanner

धर्मवीर भारती का साहित्य-चिंतन

डॉ॰ राम किंकर पांडेय
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
शासकीय लाहिड़ी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
चिरमिरी, जिला-कोरिया (छ॰ग॰)

धर्मवीर भारती ने साहित्य की विविध विधाओं में लेखन किया है। उनकी ख्याति एक कवि, कहानीकार, नाटककार, उपन्यासकार, निबंधकार आदि विविध रूपों में है। सृजनात्मक लेखन के साथ-साथ उन्होंने सैद्धांतिक पक्ष पर भी यथेष्ट लेखन किया है। धर्मवीर भारती ने साहित्यकार की प्रेरणा, साहित्य प्रयोजन और सृजन की प्रक्रिया से संबंधित लेखन के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए हैं। डॉ॰ धर्मवीर भारती साहित्य को एक व्यापक और उदार धरातल पर स्वीकार करते हैं। उनके अनुसार जीवन-प्रक्रिया और सृजन-प्रक्रिया सर्वथा अभिन्न हैं और जीवन-प्रक्रिया की लंबी शृंखला में सृजन का क्षण स्वत: बिना किसी नियम के अकारण नहीं आता है। ज्ञानोदय में लिखे एक लेख में वे कहते हैं, 'क्या ऐसा है कि समूची जीवन-प्रक्रिया अलग चलती रहती है और रचना-प्रक्रिया का घनीभूत क्षण अकस्मात कभी रहस्यमय ढंग से अकारण आ जाता है।'[1] उनके मतानुसार जीवन का व्यापक अनुभव-वैभव, जो स्थूल दृष्टि से परस्पर असंयुक्त तथा असंगठित दिखाई पड़ता है, अपने समग्र प्रभाव से सृजन-प्रक्रिया को उद्दीप्त करता रहता है, और अंत में जब वह उद्दीपन अपनी-अपनी चरम अवस्था को प्राप्त करता है तो सृजन-क्षण प्रस्तुत होता है। 'कितने ही क्षण हैं, कितनी स्थितियाँ हैं जो प्रत्यक्षत: असंबद्ध लगती हैं, पर कुल मिलाकर हमारे चेतना या अर्द्धचेतन मन में लहर पर लहर इस एक बिंदु को उभारती रहती है।'[2]

डॉ॰ धर्मवीर भारती साहित्य में वैयक्तिकता से भी अधिक सामूहिकता की प्रमाणिकता पर जोर देते हैं। इसको स्पष्ट करते हुए वे लिखते हैं, 'जहाँ लेखक ने सामान्यजन की नियति से अपनी नियति को पृथक किया कि यथार्थ का सूत्र उसके हाथ से छूटा और जब जन के, प्रजा के यथार्थ से वह विच्छिन्न ही हो गया, तब उसके लिए दो ही रास्ते बचे–राजाश्रय या रहस्यवाद।'[3] यह सत्य है कि जब-जब साहित्य राजाश्रय की ओर मुड़ता है तब-तब वह जनसामान्य से कट जाता है। मध्यकालीन साहित्य इसका स्पष्ट प्रमाण है। धर्मवीर भारती जी का मानना है कि उस साहित्य में भी जहाँ मानव का मौलिक यथार्थ प्रमाणिक रूप से मुखरित हुआ है, वहीं साहित्यिक गुण विद्यमान हैं अन्यथा साहित्य सजीव नहीं हो सका है। साहित्य-सृजन का आधार तो मनुष्य का मौलिक यथार्थ ही है। मध्यकालीन साहित्य में भी वही अंश सजीव और सप्राण है, जहाँ इस लोक का प्राणी बोल उठा है, परलोक का द्रष्टा नहीं।'[4] भारती जी साहित्य को बेहद व्यापक और उदार धरातल पर अवस्थित मानते हैं, वे साहित्य को संकीर्णता के दायरे से बाहर निकालकर रखने के आग्रही हैं। प्रगतिवाद के नाम पर वे साम्यवादी पार्टी के नियंत्रण और बँधे-बँधाए ढाँचे के कारण जो संकीर्णता आ रही थी, उसका वे प्रत्यक्ष रूप से विरोध करते हुए लिखते हैं, 'मानवता के

Scanned by CamScanner

• धार्मिक शोषण का... : एन आर सेतु लक्ष्मी 132
• पति-पत्नी के अहं के... : स्नेहा शर्मा 135
• नागार्जुन के साहित्यिक... : संदीप कुमार 138
• बाँसवाड़ा... : डॉ. सौरभ त्यागी-सुरभी दोषी 140
• सम्मेलन पत्रिका का... : त्रिभुवन गिरि 145
• बाणभट्ट की आत्मकथा का... : चंदन कुमार 148
• अमरकांत की... : अजीत कुमार पटेल 151
• रामविलास शर्मा के... : डॉ. अजीत सिंह 154
• चित्रा मुद्गल के... : डॉ. अमिता तिवारी 158
• विवेकी राय का कविता... : अनुपमा तिवारी 161
• वर्तमान समय में... : डॉ. आशीष यादव 164
• भारतेंदुयुगीन कविता... : डॉ. भास्कर लाल कर्ण 167
• भोजपुरी बारहमासा... : भव्या कुमारी 172
• नारी मुक्ति का... : डॉ. बीना जैन 175
• हिंदी पत्रकारिता... : डॉ. चयनिका उनियाल 178
• लोकमानस के अनूठे... : डॉ. छोटू राम मीणा 181
• महामारी कोविड-19 के... : डॉ. ऋषिपाल-डॉ. ज्योति श्योराण-डॉ. जयपाल मेहरा डॉ. निधि जैन-सुश्री पल्लवी 185
• योग : विश्व... : डॉ. दयाशंकर सिंह यादव 189
• पूना पैक्ट की... : डॉ. दीपक कुमार गुप्ता 192
• लोकमान्य तिलक... : डॉ. राजेश कुमार शर्मा 195
• मानवतावादी व महिला... : डॉ. संगीता शर्मा 200
• वर्तमान परिपेक्ष्य में... : डॉ. शारदा देवी 204
• संस्कृति के वाहक... : डॉ. भारती बतरा 208
• हरियाणवी सिनेमा में... : डॉ. जयपाल मेहरा 211
• महादेवी वर्मा की... : डॉ. गीता पांडेय 214
• 'मानस' में उपलब्ध... : डॉ. गीता कौशिक 218
• हिंदी नवगीतों के... : डॉ. प्रकाश चंद्र गिरि 221
• भूमण्डीकरण का... : डॉ. कमलेश सरीन 223
• सावित्री बाई फुले... : डॉ. हंसराज 'सुमन' 226
• हिंदू धर्मशास्त्र और... : डॉ. अमिष वर्मा 229
• भूमंडलीकरण और... : हुलासी राम मीना 234
• हिंदी की आदिवासी... : डॉ. जसपाल कौर 237
• रामधारी सिंह... : डॉ. जायदासिकंदर शेख 240
• डॉ. रामविलास शर्मा... : डॉ. जितेश कुमार 244
• वर्तमान पत्रकारिता में... : कामरान वासे 247
• 'पद्मावत' में प्रेम... : डॉ. केदार कुमार मंडल 251
• आदिवासी कविताओं... : प्रो. खेमसिंह डहेरिया 254
• क्षेत्रीय मौखिक... : रंजन कुमार 257
• अपने स्वत्व को... : लक्ष्मी विश्नोई 260
• श्रीलाल शुक्ल... : सुधीर कुमार जोशी 263
• आत्मनिर्भर महिलाओं... : डॉ. बिजेंद्र कुमार 267
• श्यौराज सिंह बैचेन... : डॉ. मणिबेन पटेल 270
• भारतीय समाज में... : मनीष कुमार सिंह 273
• आधुनिक इतिहास में... : डॉ. मेघना शर्मा 276
• निर्गुण संतों की... : डॉ. प्रदीप कुमार' 280
• दलित और... : डॉ. नुरजाहान रहमातुल्लाह 283
• भारत में भाषाई... : ओमप्रकाश यादव 286
• मानवीय संस्कृति... : डॉ. प्रवीण कुमार 290
• कामाख्या शक्तिपीठ... : डॉ. प्रीति बैश्य 296
• 'मोहन राकेश की... : प्रिया पाण्डेय 299
• हिंदी गजल... : डॉ. जियाउर रहमान जाफरी 303
• भीष्म साहनी का... : डॉ. राम किंकर पाण्डेय 306
• भारत की नई शिक्षा... : डॉ. रमेश कुमार 310
• श्रीलाल शुक्ल के... : रवीश कुमार यादव 313
• शैलेंद्र के भोजपुरी... : डॉ. संगीता राय 315
• रामनरेश त्रिपाठी... : संजीव कुमार पाण्डेय 319
• सूर्यकांत त्रिपाठी... : सरिता कुमारी 322
• मृदुला गर्ग के... : डॉ. सविता डहेरिया 325
• मोहन राकेश की... : डॉ. सुनील कुमार सुधांशु 331
• मीडिया में दलितों का... : डॉ. स्वर्ण सुमन 334
• डॉ. कुँअर बेचैन की... : तेज प्रताप 340
• जनजातीय.. : डॉ. उमेश कुमार पाण्डेय 344
• हिंदी दलित कविता... : विजय कुमार 348
• आधुनिक हिंदी... : विकास कुमार सिंह 351
• हिंदी साहित्य में... : विनय कुमार पाठक 354
• वैश्वीकरण और... : मुरली मनोहर भट्ट 357
• सुभद्रा कुमारी... : अनिता उपाध्याय 360
• हिंदी रंगमंच की... : डॉ आशा-डॉ. अनिल शर्मा 363
• जनमाध्यम के रूप... : डॉ. योगेश कुमार गुप्ता 367
• परंपराओं और... : डॉ. नीरव अडालजा 372
• हिंदी कथा साहित्य... : प्रियंका कुमारी गर्ग 377
• वैश्वीकरण की दौड़... : डॉ. कमलेश कुमारी 381
• 'रामचरितमानस' में... : डॉ. हेमवती शर्मा 385
• रघुवीर सहाय के... : प्रतिभा देवी 387
• भारतीय संस्कृति बनाम... : डॉ. स्वाति श्वेता 390
• अनौपचारिक... : मुकेश कुमार मीना-विनोद सेन 394
• इतिहास शिक्षण में... : डॉ. अजीत कुमार बोहत 398
• परंपरागत नृत्य कलाओं... : डॉ. दिलावर सिंह 401
• राष्ट्रीय शिक्षा... : मोनिका कौल-ईश्वर सिंह 405
• सामाजिक माध्यमों... : डॉ. अनिल कुमार 408
• हिंदी सिनेमा... : डॉ. संतोष कु. सिंह 412
• शिक्षक शिक्षा का... : विक्रम बहादुर नाग 415
• रामनरेश... : सरला माधव प्रसाद तिवारी 419
• वैदिक साहित्य में... : डॉ. राजवीर शास्त्री 423
• उच्च शिक्षा में... : मोना भटनागर-नम्रता सोनी 424
• तुलसी का काव्य... : डॉ. कुमकुम श्रीवास्तव 428
• समावेशी शिक्षा... : अश्वनी 433
• अस्तित्व की... : मनीष कुमार-डॉ. रानीबाला गौड़ 436
• अज्ञेय के... : गरिमा वर्मा--डॉ. रानीबाला गौड़ 438

Scanned by CamScanner

भीष्म साहनी का औपन्यासिक अवदान

डॉ. राम किंकर पाण्डेय

भारत विभाजन की त्रासदी पर भारतीय साहित्य में बहुत कुछ लिखा गया हैं। हिंदी, उर्दू, पंजाबी और बंगाली के साहित्य में अनेक रचनाएँ उपलब्ध हैं। हिंदी में 'तमस' से पहले यशपाल का 'झूठा सच' इस पृष्ठभूमि पर लिखी गई सबसे बृहद रचना है। तमस पर टिप्पणी करते हुए महीप सिंह लिखते हैं–"तमस देश-विभाजन की त्रासदी के लगभग तीन दशक बाद प्रकाशित हुआ था। उस समय इस उपन्यास को पढ़कर ऐसा लगा था कि इतने अंतराल के पश्चात भी इस कथ्य की सर्जनात्मक संभावनाएँ चुकी नहीं हैं। तमस की जिस बात ने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया था, वह थी अपने कथ्य के प्रति लेखक की गहरी समझ और आत्मीयता। लेखक ने जिस ढंग से स्थितियों को उभारा था, जिस सूक्ष्मता से चरित्रों का सृजन किया था और जिस अंतरंग जानकारी से घटनाओं को नियोजित किया था, उससे उस त्रासदी को उसके क्रूरतम रूप में रेखांकित किया जा सका था। 'तमस' पाँच दिनों की कहानी है, किंतु उन पाँच दिनों के पीछे हमें बहुत सारे दिन, वर्ष और शताब्दियाँ झाँकती हुई दिखाई देती हैं। घृणा, विद्वेष, सांप्रदायिक उन्माद और इन सबसे उत्पन्न विचार तथा व्यवहार जनित क्रूरता इस देश में सदियों पहले पनपी और समय-समय पर अपना रूप बदल-बदल कर नंगा नाच करती रही।"[1]

वास्तव में भीष्म साहनी ने 'तमस' में सांम्प्रदायिक उन्माद के जीवंत चित्रण के साथ ही साथ उन स्थितियों और कारणों के सटीक विश्लेषण तथा चित्रांकन का भी प्रयत्न किया है जो देश के विभाजन और संप्रदायिकता के मूल में थे। उपन्यास में उन्होंने इस बात पर विशेष जोर दिया है कि सांप्रदायिकता की आग फैलाने में ब्रिटिश शासन और उसके चाटुकार पिटठुओं का विशेष हाथ था, बल्कि यह सब बनी बनाई योजना का एक हिस्सा था। लेखक ने इस कटु ऐतिहासिक सच्चाई को बहुत स्पष्टता से रचनात्मक सघनता प्रदान की है कि अंग्रेजों ने अपनी सत्ता कायम रखने के लिए हिंदुओं और मुसलमानों को आपस में लड़ाने और फूट डालने के सैकड़ों षड्यंत्र किए और उनकी ये हरकतें आजादी प्राप्ति तक कायम रहीं। बल्कि 1947 का साल नजदीक आत-आते और तेज हो गईं। यह उनकी हरकतों का ही फल था कि कांग्रेस हिंदुओं की संस्था बन गई और जिन्ना के नेतृत्व में मुसलमानों के लिए एक अलग देश पाकिस्तान की माँग उठने लगी थी, जो 1947 में जाकर फलीभूत हुई। वास्तव में भारत के विभाजन और पाकिस्तान का गठन अपने आप में कोई एक सरल घटना मात्र नहीं थीं, यह कोई जमीन का बँटवारा भी नहीं था बल्कि इस विभाजन के भीतर हिंदुओं और मुसलमानों के पारस्परिक संशय, अविश्वास और खून खराबे की अनगिनत अमानवीय कृत्यों की कहानी छिपी हुई है। विभाजन की यह विभीषिका अपने पीछे सांप्रदायिकता की आग और वैमनस्य तथा मानवीय यातना का वह उत्स छोड़ गई जो अभी तक रह-रहकर समय-समय पर विषाक्त धुँआ फेंकती है जिससे वातावरण दूषित हो उठता है।

'तमस' में सांप्रदायिक दंगों की शुरुआत अंग्रेज शासकों के इशारे पर म्युनिसिपल कमेटी के कारिंदें मुराद अली द्वारा सीधे-सादे सामान्य व्यक्ति नत्थू द्वारा सुअर मरवाकर मस्जिद की सीढ़ियों पर डलवा देने की घटना से होती है। और वह भी केवल पाँच रुपए देकर, यहाँ हम देख सकते है कि किस तरह से मुराद अली जैसे शरारती तत्व गरीबों और मजदूर लोगों को चंद रूपयों का लालच देकर वैमनस्य का बीज बोने के लिए इस्तेमाल करने से भी नहीं चूकते। नत्थू द्वारा मस्जिद सीढ़ियों पर सुअर मारकर रखने के फलस्वरूप शहर में हिंदू-मुसलमानों के बीच भयंकर दंगा होता है, जिसका दुष्परिणाम सबको भोगना पड़ता है। दंगा फैलने के साथ ही अविश्वास, आशंका, भय और क्रोध को धर्न्मोन्माद आधारित हिंसा अपना भयंकर रूप ग्रहण कर लेती है। इस पूरे घटनाक्रम का लेखक ने बेहद विश्वसनीय और जीवंत चित्रण किया है। 'तमस' पर टिप्पणी करते हुए गोपाल राय का कहना है–"इस अमानवीय क्रूरता के बीच मानवीय संवेदना और उदारता के छोटे-छोटे प्रसंग बड़े ही प्रीतिकर और मार्मिक रूप में प्रस्तुत हुए हैं। इस माहौल में जबकि इंसानी पहचान खत्म हो जाती है, आदमी बधिक और वध्य पशु में परिणत हो जाता है, एहसान अली की घरवाली राजो या करीम खाँ जैसे नेक आदमी हैवानियत के सारे दबावों को झेलते हुए इंसानियत की लाज रखते हैं। इस प्रकार भीष्म साहनी ने सांप्रदायिकता की चुनौती को रचनात्मक

Scanned by CamScanner

- राधाचरण गोस्वामी की राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना : *डॉ. कामना पाण्डेय* 333
- पब्लिक स्कूल एवं अनुदानित इण्टर कॉलेज में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन : *डॉ. राजेश कुमार* 337
- रश्मिरथी का नया पाठ : *डॉ. प्रशांत गौरव* 341
- सृजनात्मक एवं आलोचनात्मक साहित्य के विकास में सम्मेलन पत्रिका का योगदान *त्रिभुवन गिरि* 344
- अवध का प्रथम नवाब सआदत ख़ाँ बुरहान-उल-मुल्क : *डॉ. चित्रगुप्त* 347
- हवेली संगीत में ब्रज के होरी गीतों की परंपरा व परिवर्तित स्वरूप *डॉ. स्मृति त्रिपाठी* 350
- उत्तराखण्ड की पत्रकारिता से गुजरते हुए दलित पत्रकारिता : *डॉ. राम भरोसे* 353
- तुलसी की भक्ति भावना : एक समीक्षा *डॉ. आर्यकुमार हर्षवर्धन* 356
- जायसी कृत पद्मावत में सांस्कृतिक समन्वय *डॉ. रश्मि शर्मा* 358
- भूमंडलीकरण, वसुधैव कुटुंबकम और अमेरिकीकरण : *नीरज* 362
- हिंदी साहित्य में पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन *डॉ. राखी उपाध्याय* 366
- राष्ट्रीय-सांस्कृतिक मूल्यों के प्रस्तोता नाटककार जयशंकर प्रसाद : *डॉ. नीतू शर्मा* 369
- रमेशचंद्र शाह के उपन्यासों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्षों की प्रासंगिकता *कृपा शंकर* 372
- 'अभ्युदय' उपन्यास में नारी विषयक चेतना *पंकज सिंह* 375
- ज्ञानरंजन की कहानियों में भाषा एवं शैली का साहित्यिक अनुशीलन : *अर्जुन यादव* 379
- शिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य में ग्रामीण अनुशीलन : *सीमा यादव* 382
- प्रतापनारायण मिश्र के लोक साहित्य की सामाजिक प्रादेयता : *विशाल मिश्र* 385
- पारंपरिक कृषि पद्धति पर सुराजीगाँव योजना का प्रभाव एक समाजशास्त्रीय अध्ययन *एस कुमार-सपना शर्मा सारस्वत* 387
- स्वराज्य, आत्मनिर्भरता और आदर्श राज्य की अवधारणा भारतीय विचारकों के दृष्टिकोण में *डा. सुनीता* 392
- विद्यानिवास मिश्र के निबंधों में सांस्कृतिक चेतना : *अनिरुद्ध कुमार* 395
- डॉ. अस्तअली खाँ मलकांण के काव्य में लोक संस्कृति : *डॉ. ईश्वर सिंह* 398
- मुक्तिबोध की कहानियाँ : वैचारिकी के कलेवर में आख्यान : *डॉ. राम किंकर पाण्डेय* 400
- प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी के बाल साहित्य में मानवीय मूल्य : *डॉ. श्रवण राम* 403
- आदिवासियों के...: *मिथिलेश कुमार मिश्र* 406
- भूमंडलीकरण, वसुधैव कुटुंबकम और अमेरिकीकरण : *नीरज* 409
- पूर्ववर्ती हिंदी कहानी से समकालीन हिंदी कहानी में उपेक्षा का जटिल...: *डॉ. रिंपी खिल्लन सिंह* 413
- खेलत गेंद गिरे यमुना में : 'पीड़ा के दंश' कहानी की कथावस्तु में स्त्री : *रश्मि* 416
- गणित अध्ययन : हिंदी...*डॉ. प्रीति धर्माहे* 419
- सुभद्रा कुमारी चौहान समसामयिकता के संदर्भ में मुख्यता : *अनीता उपाध्याय* 422
- गोदान और किसान का अंतःसंबंध *विजय यादव* 425
- कमलेश्वर की कहानियों में आधुनिक जीवन का यथार्थ चित्रण : *डॉ. आभा शर्मा* 429
- प्रेमचंद के कृतित्व की साहित्यिक मूल्यांकन पत्रकारिता के संदर्भ में : *मुन्ना लाल पाल* 432
- स्त्री अस्मिता की दृष्टि से मोहन राकेश के नाटकों में नारी का सामाजिक स्वरूप *संगीता कुमारी पासी-डॉ. कुसुम कुंज मालाकार* 435
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य पर जयनंदन के कहानी साहित्य में संवैधानिक मूल्यों का प्रभाव *डॉ. आगेडकर भानुदास भिकाजी श्री. डवरी दादासाहेब आनंदराव* 439
- शिक्षा के क्षेत्र में सूचना प्रोद्योगिकी का प्रदेय *डॉ. शोभा एम. पवार* 442
- विष्णु प्रभाकर के नाटकों में जीवन-दर्शन *डॉ. रीना डोगरा* 444
- मिथक का अर्थ एवं स्वरूप : भारतीय दृष्टिकोण : *डॉ. गुरदीप रानी* 447
- भारतीय महिला आंदोलन में गांधी के योगदान : *मीना चरांदा* 450
- सरकारी एवं स्ववित्त पोषित बी.एड. कॉलेजों में कार्यरत... : *शिवबच्चन सिंह यादव* 453
- सामाजिक व्यवस्था और उसके अंतर्द्वंद्वों की पड़ताल करती कविताएँ : *प्रियंका कुमारी* 457
- मैला आंचल में... : *डॉ. महेंद्र पाल सिंह* 459
- हिंदी सिनेमा पर वामपंथ का... : *शिवेंद्र राणा* 462
- अफगानिस्तान की परिवर्तित स्थिति का भारत पर प्रभाव : *डॉ. सोनाली सिंह* 465
- स्त्रीवादी साहित्य और... : *डॉ. नीलिमा चौहान* 469
- 'आनंद' मरा नहीं करते... : *कपिल कुमार* 472
- प्रेमचंद कालीन हिंदी... : *डॉ. चिम्मन* 474
- एनी बेसेंट के शैक्षिक... : *डॉ. प्रमिला मलिक-अर्चना कुमारी* 477
- भारतीय समाज एवं संस्कृति पर... : *डॉ. अर्चना सिंह* 481

Scanned by CamScanner

मुक्तिबोध की कहानियाँ : वैचारिकी के कलेवर में आख्यान

डॉ. राम किंकर पाण्डेय

हिंदी कहानी की विकास यात्रा विविधवर्णी एवं बहुरंगी रही है जिसे एक सुदृढ़ आधार देने का कार्य कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने किया। उन्होंने हिंदी कहानी को नया स्वरूप प्रदान किया था। प्रेमचंद के द्वारा खड़ी की गई बुनियाद में समय के साथ उसमें और कड़ियाँ जुड़ती गई। प्रेमचंद के बाद जैनेंद्र, अज्ञेय, यशपाल, सुदर्शन आदि ने हिंदी कहानी को नए आयाम दिए। आजादी के बाद कहानी के शिल्प और संवेदना में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। 'नई कहानी' आंदोलन ने जोर पकड़ा और कहानी विधा हिंदी साहित्य के विमर्श के केंद्र में आ गई। 'नई कहानी' अनुभव की प्रामाणिकता पर जोर देती है। आजादी के बाद जो सामाजिक यथार्थ निर्मित हुआ उसकी वास्तविक अभिव्यक्ति हमें 'नई कहानी' आंदोलन की कहानियों में देखने को मिलती है। पारिवारिक विघटन, आजादी से मोहभंग, मोहभंग से उपजे घुटन, संत्रास और कुंठा की स्थितियों की अभिव्यक्ति नई कहानी को पूर्व की कहानी से अलग करती हैं। कथाकार काशीनाथ सिंह लिखते हैं–''यथार्थ कहानी का जीवन है, इसलिए इस यथार्थ ने ही उसे पुनर्जीवित भी किया ऐसे यथार्थ ने जो उन दिनों आजादी की रूमानी परतों में लिपटा हुआ था और व्यक्त होने के लिए बेचैन था। इस तरह उसे पहचाना भले कविता ने हो, पकड़ने और सामने लाने का काम कहानी ने किया–'नयी कहानी' ने।''[1]

मुक्तिबोध की ख्याति कवि और विचारक के रूप में रही है। उनका कहानीकार रूप हमारे बीच की चर्चा से प्रायः नदारद रहा है। जबकि वह भी नई कहानी के दौर में ही कहानियाँ लिख रहे थे। लेकिन मुक्तिबोध की कहानियाँ उस दौर में अधिकतर आलोचकों द्वारा उपेक्षित ही रही हैं। संभवतः मुक्तिबोध की कहानियों की हिंदी साहित्य में व्यापक स्तर पर समीक्षा ही नहीं हुई। उनकी कहानियों के रचना समय को हम देखें तो यह पता चलता है कि उन दिनों के किसी भी साहित्यिक आंदोलन का आंतक या गहरा प्रभाव उन पर नहीं है। जबकि इसी समय उनकी महत्त्वपूर्ण कहानियाँ क्लाड ईथरली, आखेट, ब्रह्मराक्षस का शिष्य, जिंदगी की कतरन, सतह से उठता आदमी आदि प्रकाशित होती हैं। यह एक चौंकाने वाला तथ्य है कि उस समय के किसी बड़े आलोचक के यहाँ उनकी कहानियों की विस्तृत चर्चा हमें नहीं मिलती है। जहाँ थोड़ी बहुत चर्चा दिखती भी है तो यही माना जाता है कि मुक्तिबोध की कहानियाँ कहानी के साँचे में फिट नहीं बैठती हैं। जबकि उनकी कहानियाँ हिंदी कहानी की परंपरा से एकदम अलग हैं, उनका टेम्परामेंट एकदम भिन्न है। अपने एक साक्षत्कार में नामवर सिंह ने कहा था कि अगर उन्हें 'कहानी नई कहानी' लिखने के दौरान 'क्लाड ईथरली' दिख गई होती तो नई ने कहानी केंद्र में निर्मल वर्मा को नहीं, मुक्तिबोध को रखते। हालाँकि बाद में भी नामवर सिंह ने मुक्तिबोध की कहानियों पर विस्तार से कोई चर्चा नहीं की।

मुक्तिबोध रचनावली के खंड तीन में मुक्तिबोध की संपूर्ण कहानियाँ संग्रहित हैं, जिसमें उनकी पूर्ण और अपूर्ण कहानियों को संकलित किया गया है। पूर्ण कहानियों की कुल संख्या पच्चीस है और अपूर्ण कहानियों की संख्या बाईस है जिनमें एक अधूरा उपन्यास अंश भी सम्मिलित है। मुक्तिबोध की कहानियों के विषय बहुत व्यापक हैं उनकी कुछ कहानियाँ व्यक्तिपरक हैं तो कुछ मनोवृत्तिपरक हैं, कुछ कहानियों की विषय वस्तु घटना परक है तो कुछ स्थिति प्रधान कहानियाँ भी हैं। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि मुक्तिबोध स्थितियों, घटनाओं, व्यक्तियों या मनोविकारों में से जब किसी को भी कथा का स्वरूप प्रदान करते हैं तो वह कथा स्वतः गतिमान हो जाती है। उनकी रचना प्रक्रिया की पद्धति ही अलग होती है। उनके लेखन की विविधता उनकी वैचारिक धुरी में घूमती है। उनकी कहानियों पर विचार करते समय यह प्रश्न बहुधा पैदा होता है कि उनकी कहानियों में कहानीपन कितना है? इस संबंध में कथा आलोचक संजीव कुमार का मानना है, '' 'मुक्तिबोध' स्वभावतः कहानीकार नहीं हैं। असल में वे बुनियादी तौर पर विचारक है, पर मुक्तिबोध के यहाँ उनका विचारक उनके कथाकार के साथ रचनात्मक सह अस्तित्व पाने में प्रायः विफल रहा है।''[2] आगे चलकर संजीव कुमार इस बात को और स्पष्ट करते हुए यह बताते हैं कि क्यों मुक्तिबोध के यहाँ पूर्ण और अपूर्ण कहानियों की संख्या लगभग बराबर है। वे लिखते हैं–''कथाकार वाली कल्पनाशीलता का यह अभाव मुक्तिबोध के कहानी संसार में अपूर्ण रचनाओं कीबड़ी संख्या और पूर्ण कही जाने वाली कहानियों में भी अधूरेपन की प्रतीति का कारण है। ऐसा जान पड़ता है कि उनकी ज्यादातर कहानियों का भ्रूण चिंतन सूत्रों से निर्मित हुआ है, कथा स्थितियों की कौंध से नहीं। कथा स्थितियों की कौंध में जिस तरह

Scanned by CamScanner

उदयप्रकाश की कहानियों में राजनीतिक समस्याएँ/ **मिनी॰ एस॰, डॉ॰ बी॰ कामकोटि** 127
हिंदी कथासाहित्य और आलोचना : विधात्मक स्वरूप की पहचान/ **डॉ॰ रामकिंकर पांडेय** 130
समाज के विविध आयामों की झाँकी : एक सच्ची-झूठी गाथा/ **स्मृति स्मरणिका जेना** 138
वर्तमान शिक्षा-प्रणाली की दुर्दशा (सूर्यबाला के दीक्षांत उपन्यास के संदर्भ में)/ **विनीता विश्वाल** 142
जैनधर्म में अहिंसा और मोक्ष की अवधारणा/ **पूजा** 148
हिंदी सिनेमा में अभिव्यक्त आपदा का स्वरूप/ **डॉ॰ सीमा शर्मा** 151
गीताश्री की कहानियों में चित्रित यथार्थबोध/ **अर्चना यादव, डॉ॰ जयकरण यादव** 158
कालीदास विरचित मेघदूत में वर्णित आयुर्वेदिक वनस्पतियाँ/ **केशव दत्त जोशी, डॉ॰ लज्जा भट्ट (पंत)** 166
समकालीन कहानियों में सामाजिक चेतना/ **वंदना देवी, डॉ॰ कल्पना दुबे** 170
कश्मीर विषयक हिंदी कविता : उद्भव और विकास/ **उमर बशीर** 175
उत्तराखंड की भोटिया जनजाति : इतिहास, समाज एवं संस्कृति/ **हर्ष अग्निहोत्री, डॉ॰ गुड्डी बिष्ट पंवार** 183
ममता कालिया की कहानियों में स्त्री-चेतना/ **नगीना मेहरा** 188
शैलेश मटियानी के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ/ **सुबिया फैसल,डॉ॰ रेशमा अंसारी** 192
भूमंडलीकरण और सांस्कृतिक ग्राह्यता का प्रश्न श्वेत एवं स्याह पक्ष/ **डॉ॰ अनिता पाटील** 196
दलित-चिंतन के नए परिपेक्ष्य/ **ललिता यादव, प्रज्ञा पाठक** 203
हिंदी और कन्नड़ मुस्लिम उपन्यासकारों के उपन्यासों में सामाजिक चेतना/ **मेहराज बेगम सैय्यद, डॉ॰ श्रीमती राजु एस॰ बागलकोट** 208
साकेत एक दृष्टि/ **डॉ॰ वंदना शर्मा** 212
गोदान और यथार्थवाद/ **अनिरुद्ध गोयल** 217
गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर का जीवन-दर्शन/ **डॉ॰ विशेष कुमार राय** 224
ओसिया मंदिर समूह की हरिहर प्रतिमाओं का कलात्मक वैशिष्ट्य/ **बालिष्टर सिंह राठी** 230
भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक विकास में श्रमण-परंपरा का योगदान/ **डॉ॰ बृजेंद्र सिंह बौद्ध** 235
आवां उपन्यास के प्रधान नारी-पात्र/ **डॉ॰ मोहम्मद शाकिर शेख** 241
नारी-विमर्श के नए प्रश्न : प्रभा खेतान के चिंतन के विशेष संदर्भ में/

Scanned by CamScanner

हिंदी कथासाहित्य और आलोचना : विधात्मक स्वरूप की पहचान

डॉ॰ रामकिंकर पांडेय
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
शासकीय लाहिड़ी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
चिरमिरी, कोरिया (छ॰ग॰)

साहित्य में विभिन्न विधाएँ प्रारंभिककाल से ही मौजूद तो रही है पर इनके अस्तित्व और स्वरूप को लेकर साहित्य चिंतकों में पर्याप्त मतभेद रहा है। हिंदी में प्रारंभिक विधाएँ महाकाव्य, खंडकाव्य, चंपू काव्य के रूप में हमारे सामने हैं जिनका विस्तृत इतिहास हमें काव्यशास्त्र में उपलब्ध है। भारतीय काव्यशास्त्र का आरंभ नाट्यशास्त्र से माना जाता है जिसका रससिद्धांत नाटक और महाकाव्य से गहराई से संबंधित था। आचार्य भामह ने गद्य और पद्य को काव्य अर्थात् साहित्य की विधाएँ बताई हैं–'शब्दार्थौसहितौ काव्यं गद्यं पद्यं तद्विधा'[1] (काव्यालंकार–1/16) आगे चलकर उन्होंने और व्याख्या करते हुए साहित्य के पाँच प्रकार सर्गबंध, अभिनेयार्थ, आख्यायिका, कथा अनिबद्ध बताए–

संगबन्धोऽभिनेयार्थः तथैवाख्यायिका कथा।
अनिबद्धउच काव्यादि तत्पुनः पउचधोच्यते।[2]

–काव्यालंकार 1/18

साहित्य की विधाओं पर विचार करते हुए महाकवि और गद्यकार आचार्य दंडी ने छंद के परिप्रेक्ष्य में उसकी तीन विधाएँ बताई हैं–'गद्यं पद्यं मिश्रउच तत्र त्रिधैव व्यवस्थितम्। (काव्यादर्श1/11) इसी तरह अग्निपुराण में भी गद्य, अर्थात् 'पाद विभाग से रहित पदों का प्रवाह के तीन भेद बताए गए हैं–चूर्णक, उत्कलिका तथा वृत्तगंधि। गद्य को शैली तथा विषयवस्तु के आधार पर पाँच प्रकारों में बाँटा गया है–आख्यायिका, कथा, खंडकथा, परिकथा और कथानिका। हिंदी साहित्य की वर्तमान कथा-आलोचना के अनेक शब्द जैसे–कथा, उपन्यास, उपन्यासिका, लघु उपन्यास, लंबी कहानी, लघुकथा इत्यादि को उक्त वर्गीकरण से जोड़कर देखा जा सकता है।

विधा का शाब्दिक अर्थ है–भेद या प्रकार। फ्रेंच और लैटिन के इन दिनों बहुप्रचलित शब्द 'ज्याँ' (Genre) को उसी तरह साहित्य के 'प्रकार' (Kind) के रूप में प्रयोग किया जाता रहा है। जिस प्रकार संस्कृत के शब्द काव्य भेद या विद्या का उपयोग होता रहा है। जिस तरह अँग्रेजी में Mode, Form, Kind, Type आदि शब्द हैं उसी तरह से हिंदी में काव्य रूप, काव्य भेद, काव्य प्रकार, विधा आदि शब्द हैं। अब यहाँ एक और प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या विधा का संबंध रचना की आंतरिक प्रकृति से होता है? या और कहीं से? इस संबंध में सी॰एस॰ लेविस का एक मजेदार कथन है कि अच्छा प्रेमगीत (Love-Sonnet) वही लिख सकता है जो न केवल सुंदर युवती पर मुग्ध होता है बल्कि 'गीत' (Sonnet) विधा पर भी। कुल मिलाकर हम यह कह

ISSN 0975-735X

Scanned by CamScanner

समसामयिक सृजन

साहित्य, शिक्षा और संस्कृति का संगम

संरक्षक
डॉ. प्रभात कुमार

प्रधान संपादक
प्रो. रमा

संपादक
डॉ. महेन्द्र प्रजापति

संपादन सहयोग
रीमा प्रजापति

ले-आउट
स्कोप सर्विसेज, दरियागंज, नई दिल्ली

संपादकीय कार्यालय
मकान नं. 189, ब्लॉक-एच
विकासपुरी, नई दिल्ली-110018

पत्राचार
एफ-114, तृतीय तल, SLF वेद विहार,
नियर: शंकर विहार ऑटो स्टैंड, लोनी
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201102

सदस्यता
आजीवन : 5000/-रुपए
संपर्क : 9871907081
वेबसाइट : www.samsamyiksrijan.com
E-mail : samsamyik.srijan@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रण
हरिन्द्र तिवारी
हंस प्रकाशन, दिल्ली
मो. : 7217610640, 9868561340
ईमेल : hansprakshan88@gmail.com
वेबसाइट : www.hansprakashan.com

विभाजन की त्रासदी और मंटो — 7
विजय पालीवाल

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) का विश्लेषणात्मक अध्ययन — 11
डॉ. अजीत कुमार बोहत

स्त्री अस्मिता संघर्ष और राजकमल चौधरी का हिंदी कथा साहित्य — 15
अजीत सिंह

आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी की इतिहास-दृष्टि — 18
डॉ. अमित सिन्हा

मध्यवर्गीय जीवन और चन्द्रकिरण सौनरेक्सा का कहानी संग्रह 'आधा कमरा' — 20
अनिता देवी

छत्तीसगढ़ के आर्थिक विकास में जल संसाधन की भूमिका — 23
डॉ. श्रीमती अनीता मेश्राम

राहुल सांकृयायन का यात्रावृत्त साहित्य में वर्णित धार्मिक पक्ष — 27
अरूण माधीवाल

सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना के पक्षधर : सुब्रह्मण्य भारतीय — 30
डॉ. के. बालराजू

नेतृत्व और सम्प्रेषण का यथार्थ — 34
डॉ. कुमार भास्कर

नयी कविता और कुँवर नारायण — 37
भावना

आधुनिक दिल्ली हिंदी रंगमंच का स्वरूप — 40
डॉ. धर्मेंद्र प्रताप सिंह

स्त्री अस्मिता का मिथक — 43
गजेन्द्र पाठक

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भारत-नेपाल संबंध — 45
डॉ. गौरव कुमार शर्मा

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में दलित का सामाजिक-बोध — 47
गौतम कुमार खटीक

भारत में राजनीतिक विकास एवं संविधान संशोधन : एक विश्लेषण — 50
गोविन्द नैनीवाल

भारत में जलवायु परिवर्तन एवं सरकारी नीतियां — 54
हंसा मीना

बेटी उपन्यास में बेटी की गौरव गाथा — 57
डॉ. कमलेश कुमारी

रामवृक्ष बेनीपुरी के गद्य साहित्य की भाषा — 59
डॉ. करतार सिंह

राष्ट्रीय चेतना के प्रखर संवाहक : मैथिलीशरण गुप्त — 62
डा. राम किंकर पाण्डेय

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक तथा स्वत्वधिकारी : *डॉ. महेन्द्र प्रजापति द्वारा एच-ब्लॉक, मकान नं. 189, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से प्रकाशित*

Scanned by CamScanner

राष्ट्रीय चेतना के प्रखर संवाहक : मैथिलीशरण गुप्त

डॉ. राम किंकर पाण्डेय

'राष्ट्र' केवल सीमाओं से घिरा हुआ भूमि का कोई टुकड़ा नहीं वरन यह मनुष्य के चिंतन और कर्म की पृष्ठभूमि में जीवन का वह अमिट मूल्य है । जहॉ मनुष्य कर्म, सभ्यता, संस्कृति और आस्था के मेल से नई भावना को जन्म देता है । सृष्टि के आविर्भाव से मनुष्य के भाव जगत में जननी और जन्मभूमि का सर्वोच्च स्थान रहा है । हमारे यहॉ कहा भी गया है –''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।' जिस धरा पर मनुष्य का पालन–पोषण होता है, उसे अन्न, जल, वायु मिलते हैं उस धरा की रक्षा का स्वाभाविक दायित्व बोध मानव के भीतर होता है। अपनी भूमि से लगाव के आत्मिक बोध के कारण मनुष्य उससे गहनतम रूप से जुड़ जाता है। इसी दायित्व को जब एक जन समुदाय ग्रहण करता है तो वह राष्ट्र के रूप में जाना जाता है।

'राष्ट्र' शब्द सर्वधातुभ्यः 'ट्रन' उगादि पत्यय के संयोग से 'रासु शब्दे' अथवा 'राज शोभते' धातु से बनता है। संस्कृत का 'राष्ट्रम' शब्द 'राज+ट्रन' शब्दों के संयोग से बना है जिसका अर्थ है राज्य, देश साम्राज्य आदि। व्युत्पत्ति की दृष्टि से राष्ट्र संयुक्त शब्द और पुरुष वाचक संज्ञा है, जिसका अर्थ है – 'राज्य में बसने वाला जनसमुदाय जिसमें जिला, प्रदेश, देश अधिवासी, जनता और प्रजा का समेकित स्वरूप मौजूद होना है। विभिन्न शब्दकोशों में इसकी व्याख्या हमें मिलती है। डॉ. रामचंद्र वर्मा अपने कोश में 'राष्ट्र' शब्द को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं –''किसी निश्चित और विशिष्ट क्षेत्र में रहने वाले लोग जिनकी एक भाषा, एक–सी रीति–रिवाज तथा एक सी विचारधारा होती है और वे एक शासन में रहते हैं उसे राष्ट्र कहा जाता है।'' 'राष्ट्र' शब्द में 'ईय' प्रत्यय लगने से 'राष्ट्रीय शब्द बना है। 'राष्ट्रीय' शब्द 'राष्ट्रे भव इति राष्ट्रीयता' से भी बना है। राष्ट्र+धञ (राष्ट्रीयः) हिन्दी भाषा में 'राष्ट्रीय एकस्य भाव इति एकता।' के रूप में बना है। राष्ट्र की अवधारणा बेहद पुरानी है। लेकिन अठारहवीं – उन्नीसवीं शताब्दी के आसपास राष्ट्र की संकल्पना एक नए अर्थ में उभरकर आती है। आधुनिक युग में 'स्वतंत्रता' को राष्ट्र का महत्वपूर्ण अंग माना गया है। महात्मा गॉधी ने भी राष्ट्र का अभिप्राय 'स्वतंत्र देश' ही माना है। राष्ट्र की अवधारणा में वहां के निवासियों का मानस अपने देश की भौगोलिक सीमाओं, वहॉ के गौरवशाली इतिहास, परंपराओं आदि से अभिन्न रूप से जुड़ जाता है और वह उस राष्ट्र की एकता, अखंडता, संप्रभुता के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को तैयार रहता है ।

प्राचीन काल में राष्ट्रीयता का मूल स्वरूप सांस्कृतिक रहा है, जहॉ जन्मभूमि को माता के समान श्रेष्ठ माना जाता है। आदिकालीन, साहित्य में वीरता के स्वर तो हैं लेकिन उस चेतना में व्यापक राष्ट्रीयता का अभाव दिखाई देता है क्योंकि उस समय कवि राज्याश्रित होते थे और वे अपने आश्रयदाता राजाओं की प्रशस्तिगान में ही अपनी संपूर्ण प्रतिभा का प्रदर्शन करते थे। भक्तिकालीन साहित्य ईश्वर से जुड़ाव का साहित्य रहा है जिसे लोकमंगल का साहित्य कहा गया है लेकिन राष्ट्रीय चेतना के व्यापक सूत्र वहॉ भी दिखाई नहीं देते हैं। रीतिकाल के काव्य में श्रृंगार की प्रधानता है लेकिन वहॉ भूषण जैसे कवि हैं जिनके काव्य में वीरोचित भाव हमें मिलते हैं, भूषण ने अपनी कविता के माध्यम से शौर्य की गाथा कही है। लेकिन यहॉ भी राष्ट्रीयता के उस स्वर का अभाव है जिसे हम आज के संदर्भ में देखते हैं।

भारत में राष्ट्रीय चेतना का प्रसार आधुनिक काल में हमें मुकम्मल रूप में दिखाई देता है, जिसकी अभिव्यक्ति आधुनिक काल के साहित्य में हमें प्रखर रूप से मिलती है। उन्नीसवीं शताब्दी के पुनर्जागरण ने सर्वप्रथम सांस्कृतिक चेतना का प्रसार संपूर्ण देश में किया। राजाराम मोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, केशवचंद्र सेन, विवेकानंद आदि इस सांस्कृतिक पुनर्जागरण के वाहक बने। इसी समय भारत का स्वाधीनता संघर्श तीव्रतर हुआ जिसमें जनभागीदारी का व्यापक स्वरूप हमें दिखाई देता है। स्वतंत्रता संघर्ष की यह लौ भारत के जनमानस को जगा रही थी। हिन्दी साहित्य के कवि रचनाकार भी इससे अछूते नहीं रहे। भारतेन्दु हरिशचंद्र द्वारा आधुनिक काल में उदीप्त राष्ट्रीय चेतना की काव्य धारा बाद के कवियों में भी अनवरत रूप से जारी रही। इस कड़ी में रामनरेश त्रिपाठी, श्रीधर पाठक, सियाराम शरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद आदि की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

मैथिली शरणगुप्त का नाम तत्कालीन कवियों में राष्ट्रीय चेतना के प्रखर संवाहक के रूप में अग्रणी है। हृदय से भक्त, स्वभाव से उदार, धर्मपरायण, सत्यान्वेशी, विनम्र और मिलनसार रचनाकार मैथिली शरण गुप्त जी ने अपनी रचनाओं से राष्ट्रीय चेतना को एक नई उॅचाई दी। गुप्त जी हमारे देश और युग के प्रतिनिधि कवि हैं। हमारा देश अखंड है और उस अखंडता की भावना मैथिली शरण गुप्त ने दी है। जब तक समूचे देश की राष्ट्र प्रेम के आधार पर एकता के सूत्र में बॉधने का प्रयत्न कोई न करे, तब उसे राष्ट्र कवि कहलाने का सौभाग्य प्राप्त नही हो सकता। गुप्त जी ने एक राष्ट्र की भावना अपनी रचनाओं द्वारा हमें दी है और इसी से भारतवर्ष में वे राष्ट्र कवि के नाम से विख्यात हैं। 'भारत–भारती' मैथिली शरण गुप्त की प्रमुख रचना है। यह अपने युग की महत्वपूर्ण रचना है जिसने

Scanned by CamScanner

अनुक्रम

'तेजवंत तेजाजी' महाकाव्य में लोकसंस्कृति/ **मोहित कुमार** 11

फिल्मों में लोकसंगीत : एक अवलोकन/ **प्रो॰ माला मिश्र** 17

लोकसंस्कृति : समकालीन परिदृश्य/ **डॉ॰ राकेश कुमार दुबे** 21

मोहन राकेश के चयनित एकांकी/ **डॉ॰ ममता कुमारी** 26

पंजाब की 21वीं सदी की हिंदी कविता में दलित-विमर्श/ **प्रीति गुप्ता, डॉ॰ अनिल कुमार पांडेय** 31

रंगमंच का बदलता स्वरूप/ **डॉ॰ प्रमोद परदेशी** 35

भक्ति-आंदोलन में मराठी एवं गुजराती संतों का प्रदेय/ **डॉ॰ राम किंकर पांडेय** 40

'जो इतिहास में नहीं है' और 'धूणी तपे तीर' उपन्यासों में अभिव्यक्त आदिवासी आंदोलन/ **डॉ॰ मृदुल जोशी, आँचल चौधरी** 48

'मुहता नैणसी री ख्यात' में वर्णित समाज और संस्कृति/ **डॉ॰ रणजीत सिंह चौहान** 54

'जहाजिन' उपन्यास : एक गिरमिटिया महिला की संघर्षकथा/ **डॉ॰ मुन्नालाल गुप्ता** 59

भारतीय नाट्यकला में संगीत का महत्त्व/ **कृष्ण कुमार** 65

हरियाणवी लोकगीतों में पर्यावरण चेतना/ **डॉ॰ सुमन** 70

हरियाणवी लोकगीतों में दर्शन-तत्त्व/ **डॉ॰ विकास कुमार, डॉ॰ मनोज कुमार** 75

असमिया लोकसाहित्य में राम : एक अध्ययन (लोकगीतों के विशेष संदर्भ में)/ **तृष्णा दत्त** 81

परंपरा और आधुनिकता के मध्य स्त्री की अस्मिता का संघर्ष/ **श्वेतासिंह** 86

21वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में कृषक जीवन : एक विवेचन/ **रीना चौधरी** 92

असम की बोड़ो जनजाति का सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन/ **डॉ॰ दिनेश साहू** 97

दैनिक भास्कर की वेबसाइट पर प्रकाशित खबरों और आलेखों का दिल्ली-एनसीआर के युवाओं पर प्रभाव: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन/ **आदर्श कुमार** 102

अफगानिस्तान संकट पर वैश्विक समुदाय की निष्क्रियता/ **डॉ॰ मोहनलाल जाखड़** 108

चोलकालीन स्थानीय स्वशासन/ **डॉ॰ मनीष कुमार साव** 114

भारत में आर्थिक विकास में कृषि आधारित उद्योगों की भूमिका/ **रमाशंकर शर्मा, डॉ॰ स्वाति जैन** 118

छात्रों के अकादमिक प्रदर्शन पर पढ़ने की आदतों का प्रभाव/ **शीतल शर्मा, डॉ॰ वर्षा शर्मा** 123

वर्तमान भारतीय उद्योग-एक विश्लेषणात्मक अध्ययन/

ISSN 0975-735X

Scanned by CamScanner

भक्ति-आंदोलन में मराठी एवं गुजराती संतों का प्रदेय

डॉ॰ राम किंकर पांडेय
सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष हिंदी
शासकीय लाहिड़ी महाविद्यालय, चिरमिरी
जिला कोरिया (छ॰ग॰)
प्रो॰ डी॰एस॰ ठाकुर
प्राध्यापक हिंदी
डॉ॰ भीमराव अंबेडकर शासकीय महाविद्यालय
पामगढ़, जिला जांजगीर चांपा (छत्तीसगढ़)

'भक्ति' शब्द की उत्पत्ति जिस 'भज' धातु से हुई है, उसका अर्थ होता है–सेवा करना। परंतु यह इसका व्यापक अर्थ नहीं बल्कि संकुचित अर्थ है। व्यापक अर्थ में इसमें ईश्वर का भजन, पूजन, प्रेम और समर्पण सब शामिल हैं। वास्तव में भक्ति ईश्वर के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति है। यह ईश्वर-प्राप्ति के ज्ञान और कर्मरूपी साधनों से थोड़ा भिन्न है। जहाँ ज्ञान का संबंध ईश्वर-संबंधी तत्त्वचिंतन से है तथा कर्म का उन क्रियाओं से जिनके द्वारा ईश्वर की प्राप्ति होती है, वहीं भक्ति का संबंध ईश्वर के प्रति प्रेम और समर्पण से है। इसीलिए देवर्षि नारद ने भक्ति की परिभाषा देते हुए कहा है–'भक्ति भगवान के प्रति परम प्रेमरूपा और अमृत स्वरूपा है।' (सा त्वस्मिन परम प्रेम रूपा। अमृत स्वरूपा चा। –नारद भक्तिसूत्र, श्लोक 2,3) ऋषि शांडिल्य के अनुसार भी 'ईश्वर के प्रति परम अनुरक्ति ही भक्ति है। जिन्होंने जाना है, उन्होंने कहा है कि उसके साथ जुड़ जाने से अमरतत्व की प्राप्ति हो जाती है।' (सा परानुरक्तिरीश्वरे। तत्संस्थस्यामृतत्वोपदेषात। शांडिल्य भक्तिसूत्र, श्लोक 2-3) भक्ति के संबंध में वस्तुतः सच यह है कि भक्ति साधना भी है और सिद्धि भी है। वहाँ साधन ही साध्य है। भक्ति का अर्थ है परम प्रेम। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भी भक्ति के स्वरूप पर विचार करते हुए इसे प्रेम और श्रद्धा का योग बताया है। उनके शब्दों में, 'जब पूजाभाव की वृद्धि के साथ श्रद्धा-भाजन के सामीप्य लाभ की प्रवृत्ति हो, उसकी सत्ता के कई रूपों के साक्षात्कार की वासना हो, तब हृदय में भक्ति का प्रादुर्भाव समझना चाहिए। जब श्रद्धेय के दर्शन, श्रवण, कीर्तन, ध्यान आदि में आनंद का अनुभव होने लगे, जब उससे संबंध रखनेवाले श्रद्धा के विषयों के अतिरिक्त बातों की ओर भी मन आकर्षित होने लगे, तब भक्तिरस का संचार समझना चाहिए।' (चिंतामणि भाग-1, पृ॰ 26)

यह भक्ति किसी कामना से युक्त नहीं है बल्कि यह संपूर्ण समर्पण की वस्तु है, क्योंकि इसमें भक्त अपने सारे कर्मों को भगवान को ही अर्पित कर देता है। वह अपने लौकिक-वैदिक सभी क्रियाकलापों का भगवान में न्यास कर देता है। इस भक्ति को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। यह गूँगे के स्वाद की तरह अनिर्वचनीय है। यह गुण, कामना और वियोगरहित है। यह सूक्ष्मतर होते हुए भी अनुभवगम्य है तथा इसमें सदा वृद्धि होती रहती है। यह मनुष्य का प्रयास नहीं, ईश्वर का प्रसाद है इसीलिए इसे ईश्वर-प्राप्ति का सबसे सहज-सरल मार्ग माना गया है।

ISSN 0975-735X

Scanned by CamScanner

Asian Basic and Applied Research Journal

4(2): 168-171, 2021; Article no.ABAARJ.617

Study the Effect of Magnetic Clouds on Geomagnetic Indices during Period 2007

S. G. Singh[1*], Subhash Chandra Chaturvedi[2], Achyut Pandey[3] N. K. Patel[1] and P. R. Singh[1]

[1]Department of Physics, Govt. Chhatrasal P.G College, M.P, 488001, India.
[2]Department of Physics, Govt. Lahiri College, Chirimiri (Koriya) C.G, India.
[3]Department of Physics, Govt. T.R.S College, Rewa, M.P, 486001, India.

Authors' contributions

This work was carried out in collaboration among all authors. All authors read and approved the final manuscript.

Short Research Article

Received 07 September 2021
Accepted 15 November 2021
Published 18 November 2021

ABSTRACT

The magnetic clouds event is a large scale interplanetary structure produced due to transient ejections in ambient solar wind. Several researchers investigate time to time to derive effect of magnetic clouds on geomagnetic field as well as cosmic rays [1]. Mishra, et. al. [2] studied effects of magnetic clouds event on geomagnetic field & cosmic rays for 3 various conditions. They have concluded that magnetic clouds associated with turban shock produce large cosmic ray intensity decreases & geomagnetic field variations. Several studies indicate a correlation in-between geomagnetic activity & southward element of interplanetary magnetic field [3]. In this study we have taken 3 & 5 events of magnetic clouds for years of 2006 & 2007. A chree study of super epocs procedure has been adopted to effects of magnetic cloud events on geomagnetic activity on short term basis. The results of chree study for taking daily value of geomagnetic Dst index for -5 to+10 days. This study has been done for both years of 2006 & 2007. Zero days are taken on arrival time of magnetic cloud events. Large decreases in Dst value for both years are seen. It indicates significant enhancement in geomagnetic field of earth due to influence of magnetic clouds. For further analysis, we have taken few magnetic clouds events to observe there association with interplanetary & geomagnetic indices.

Keywords: Interplanetary Magnetic Field (IMF); magnetic cloud; Dst index; Plasma Temperature (T); Proton density (D) and Plasma speed (V).

1. INTRODUCTION

The event of magnetic cloud in interplanetary medium was first introduced and interpreted by Burlaga et al. 1981. Magnetic cloud is a particular type of ejecta with following properties: (1) the magnetic field direction rotates smoothly through a large angle during an interval of order

**Corresponding author: Email: sgs81physics@gmail.com;*

ORIGINAL RESEARCH PAPER

Physics

CORRELATIVE STUDY OF INTERPLANETARY MAGNETIC FIELD (IMF) WITH SOLAR INDICES DURING PERIOD 2008-2020

KEY WORDS: Interplanetary Magnetic field (IMF) (B), Sun-spot Number (Rz), Solar Wind Velocity (V), Ap-Index and Disturbance Strom Time (Dst).

S.G Singh* Department of Physics Govt. Chhatrasal P.G College M.P, 488001. *Corresponding Author

Subhash Chandra Chaturvedi Department of Physics Govt. Lahri College Chirmeri (Corea) C.G,

Achyut Pandey Department of Physics Govt. T.R.S College Rewa M.P, 486001.

N.K Patel Department of Physics Govt. Chhatrasal P.G College M.P, 488001.

Pusparaj Singh Department of Physics Govt. Chhatrasal P.G College M.P, 488001.

ABSTRACT

Burnberg & Deter (1954) have observed spatial anisotropy & attributed it to the existence of the extra cosmic ray particles arriving from asymptotic direction 1800 hours' local time. Long term variations of cosmic ray intensity are related to 11 year-period of solar activity related by sunspot number & the 22 year period of solar magnetic polarity cycle. Bush (1954) demonstrated for the first time sunspot cycle & cosmic rays intensity variation were anti correlated, Parker (1965) provided the theoretical explanation for this modulation. Nagashima & Morishita (1974) used sunspot number to study the long term variation of cosmic rays intensity Bowe & Hutton (1982) used solar flare number as representative of solar activity. Akassfu et al. (1985) have made a detailed study of long term variation by considering a number of parameter representing the solar activity index. The importance of propagation of disturbance to interplanetary medium associated with solar flare & sunspot number was shown by Hotton (1980) Donald et al (1982), Burlaga et al (1983). The relationship between solar wind parameters & geomagnetic disturbance has been investigated by many authors in past. Statistical studies of the correlation between the index & interplanetary magnetic field are reviewed by Hinshberg & Colburn (1969) & Snyder et al (1963). The nature of long term modulation is expected to depend upon the polarity of the solar poloidal magnetic field in addition to the sunspot numbers & other parameters of solar activity.

INTRODUCTION

The interplanetary magnetic field (IMF) is a part of the Sun's magnetic field that is carried into interplanetary space by the solar wind. The interplanetary magnetic field lines are said to be "frozen in" to the solar wind plasma. Because of the Sun's rotation, the IMF, like the solar wind, travels outward in a spiral pattern that is often compared to the pattern of water sprayed from a rotating lawn sprinkler. The IMF originates in regions on the Sun where the magnetic field is open i.e. where field lines emerging from one region do not return to a conjugate region but extend virtually indefinitely into space. The solar wind is a stream of energetic charged particles basically electrons and protons. Solar wind is flowing outward from the Sun through the solar system more than 900 km/s speed at a temperature of 1 million degrees (Celsius). A geomagnetic storm is defined by changes in the Dst (disturbance – storm time) index. The Dst index estimates the globally averaged change of the horizontal component of the Earth's magnetic field at the magnetic equator based on measurements from a few magnetometer stations. Dst is computed once per hour and reported in near-real-time. During quiet times, Dst is between +20 and -20 nano- Tesla (nT). The Ap index is averaged planetary A-index based on data from a set of specific Kp stations. The A-index provides a daily average level for geomagnetic activity. Because of the non-linear relationship of the K-scale to magnetometer fluctuations.

OBERVATIONAL ANALYSIS

In present analysis we observed interplanetary magnetic field, sun-spot number, Ap-index, Dst data due to omini website. Yearly average data observed from 2012-2020 which are given below:

YEAR	Interplanetary Magnetic Field	Solar wind Velocity	Sun- spot no.	Dst	Ap-index
2008	4.2	450	4	-8	7
2009	3.9	364	5	-3	4
2010	4.7	403	25	-9	6
2011	5.3	420	81	-11	7
2012	5.7	408	85	-12	9
2013	5.2	397	94	-10	8
2014	6.1	398	113	-11	8
2015	6.7	437	70	-14	12
2016	6.1	446	40	-10	10
2017	5.2	455	22	-9	10
2018	4.7	412	7	-6	7
2019	4.5	398	4	-5	6
2020	4.3	377	3	-3	5

RESULTS AND CONCLUSIONS

In present study, we initially determined solar Parameters during years 2008-2020, have been associated with different parameters such as sunspot numbers (Rz), interplanetary magnetic field (B), Solar wind velocity, Ap-index, Dst parameter. Solar terrestrial relationship also provides an important factor to explain the aspects of the variation of cosmic rays.

A correlative analysis has been done between interplanetary magnetic field (B), Sun-spot number, Solar wind velocity, Ap-index and Dst parameter. Yearly mean values of all parameters have been taken in correlative analysis. Direct correlation between solar wind velocity (V) & interplanetary magnetic field (B), interplanetary magnetic field and Sun-spot number, interplanetary magnetic field and Ap-index are reconfirmed for the recent periods but anti correlation between interplanetary magnetic field and Dst are reconfirmed for the resent period. For correlative analysis, we have used the period of 2008-2020.

Using the yearly mean values of interplanetary magnetic field, Sun-spot number, Solar wind velocity, Ap-index and Dst parameter, the correlation coefficient have been derived for the period 2008-2020. Coefficient of correlation is found to be positive & high for the most of the period. We have drawn cross plot for the yearly values of interplanetary magnetic field and Solar wind velocity, Sun-spot number, Ap-index in

International Journal of Research in Engineering and Science (IJRES)
ISSN (Online): 2320-9364, ISSN (Print): 2320-9356
www.ijres.org Volume 09 Issue 10 \ 2021 \ PP. 67-71

The Solar-Terrestrial Links and Energy Transfer Mechanism in Recurrent and Non-recurrent Geomagnetic activities And Impacts of Solar Plasma on Earth's

S.C.Chaturvedi[1] Achyut Pandey[2] Brijesh Singh Chauhan[3] Yash kumar Singh[4]
1. Department of physics Govt. Lahiri P.G.College Chirimiri Distt.Koriya (C.G.)
2. Department of Physics, Govt.T.R.S.College Rewa Distt.Rewa (M.P)
3. Department of Physics Govt. College Majhauli Distt.Sidhi (M.P.)
4. Department of Physics Govt. Model Science College Rewa Distt.Rewa (M.P.)

Abstract
Geomagnetic storms are the most dramatic manifestation of solar-terrestrial coupling.They involve the injection of large amounts of energy from the solar wind into the earth's magnetosphere, ionosphere and thermosphere. There are number of solar sources, two types of solar wind streams and different interplanetary parameters that are responsible for geomagnetic storms have been investigated by many researcher. Recurrent storms occur most frequently in the declining phase of the solar cycle. Non-recurrent geomagnetic storms occur most frequently near solar maximum. The low-energy ions that replace them contribute little current, and so the strength of the ring current decreases with time. This is the recovery phase of the storm. Many storm recoveries occur in at least two stages. The first stage occurs due to rapid loss of oxygen ions, and the second from the slower loss of protons. only two are well known for our climate change and global warming, one is Earth itself and other the Sun.

Date of Submission: 11-10-2021 Date of acceptance: 25-10-2021

Introduction

The basic components that influence the Earth's climatic system can occur externally (from extraterrestrial systems) and internally (from ocean, atmosphere and land systems). The external change may involve a variation in the Sun's output.Internal variations in the Earth's climatic system may be caused by changes in the concentrations of atmospheric gases, mountain building, volcanic activity.Sun, oceans, atmosphere, cryosphere, land surface and biosphere. The Sun is the main source of the Earth's weather and climate.Solar Terrestrial Links.They involve the injection of large amounts of energy from the solar wind into the earth's magnetosphere, ionosphere and thermosphere geomagnetic storms and auroral display. Geomagnetic storms also have major effects on technical systems in space.The major perturbations in ionospheric conditions that affect communications and performance of satellites in geosynchronous orbit. Thus major magnetic storms are the events of significant scientific and natural interest.Energy Transfer Mechanism.

Geomagnetic hazards

Geomagnetic storms are large scale disturbances on the earth's magnetosphere and decreases horizontal component (H) of earth's magnetic field. The solar wind pressure on the magnetosphere will increase or decrease depending on the solar activities. Solar wind pressure changes modify the electric currents in the ionosphere. The solar wind also carries with it the magnetic field of the Sun. This field will have either a north or south orientation. Either the solar wind has energetic bursts, contracting and expanding the magnetosphere, or the solar wind takes a southward polarization. The southward field causes magnetic reconnection of the dayside magnetopause, rapidly injecting magnetic and particle energy into the earth's magnetosphere. During a geomagnetic storm the ionosphere's F_2 layer will become unstable, fragment, and may even disappear. In the northern and southern pole regions of the Earth aurora will be observable in the sky. The telegraph lines in the past were affected by geomagnetic storms as well. Earth's magnetic field is used by geologists to determine rock structures. For the most part, these geodetic surveyors are searching for oil, gas, or mineral deposits. They can accomplish this only when earth's field is quiet, so that true magnetic signatures can be detected. Other surveyors prefer to work during geomagnetic storms, when the variations to earth's normal subsurface electric currents help them to see subsurface oil or mineral structures. When magnetic fields move about in the vicinity of a conductor such as a wire, an electric current is induced into the conductor. Power companies transmit alternating current to their customers via long transmission lines. The nearly direct currents induced in these lines from geomagnetic storms are harmful to electrical transmission equiptment, especially to the transformers, it overheats their coils and causes their

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"The Geomagnetic Field Variations Morphology of Geomagnetic Storms and Distribution of Plasma in the Magnetosphere"

Brijesh Singh[1] Lalji Tiwari[2] Yash Kumar Singh[3] Devendra Sharma[4] Subhash Chandra Chaturvedi[5]

1. Department of Physics Govt. College Majhauli Distt. Sidhi (M.P.)

2. Department of Physics Govt. Vivekanand College Maiher Distt.Satna (M.P.)

3. Department of Physics Govt. Model Science College Rewa Distt.Rewa (M.P.)

4. Department of Physics Govt. Model Science College Rewa Distt.Rewa (M.P.)

5. Department of physics Govt.Lahiri P.G.College Chirimiri Distt.Koriya (C.G.)

Abstract-:

There are two types of geomagnetic field variations termed as secular change and transient variations. The main field of the Earth is subject to a slow variation in time, known as secular variation. There are two kinds of transient variation, the first includes relatively small and regular daily variation, and the second is the disturbances of a more violent nature known as geomagnetic storms. Alexander von Humboldt was the first to discover the dependency of magnetic intensity on latitude and observed the geomagnetic field at various locations at Earth (**Cane, H.V.1985**)[1].The variation in geomagnetic field is known as geomagnetic storm. The magnetosphere is filled with tenuous plasmas. Five plasma domains of different energy characteristics are well identified as the plasma mantle the plasma sheet the cusp region,

Introduction-:

The variation in geomagnetic field is known as geomagnetic storm. Geomagnetic storms are major disturbances on the magnetosphere that occur when the interplanetary magnetic field turns southward and remains southward for prolonged period of time. During a geomagnetic storm main phase, charged particles in the near-earth plasma sheet are energized and injected deeper into the inner magnetosphere the Van Allen belts and the plasmasphere. Magnetosheath-like plasmas have been found at several regions in the magnetosphere.The common characteristics of plasma mantle are that they have magnetosheath-like energy spectra and flow in the anti-solar direction. The magnetosphere has two domains where relatively dense plasmas are located. In the first plasmasphere occupies a part of the inner magnetosphere and its location varies with a fraction of local time.The plasmasphere is surrounded by another domain known as plasma sheet.The plasma sheet is a sheet-like distribution (**Barlow, W.H.1848**)[2].Centered on the midplane of the magnetotail called the 'neutral sheet.The plasma particles from inner or central plasma sheet (CPS) contribute significantly in exciting the diffuse auroral luminosity, after they are precipitated into the ionosphere by various plasma processes.Plasma particles in the upper

Journal of Literature, Culture & Media Studies (ISSN-0974-7192) is published twice a year in summer and in winter. It is a Multidisciplinary International Peer Reviewed Research Journal of Higher Education on Literature and Literary Theory, Art & Aesthetics, Cultural & Media Studies, Linguistics & English Language Teaching, Philosophy & Education, Hypertext & Communication Studies, Humanities & Social Sciences.

Manuscripts should be written in 3000 words, prepared according to the latest *MLA Handbook* style. Author's name should appear on the cover page only. Manuscripts should be submitted in MS-Word along with two copies, double space throughout and accompained by duly stamped, self-addressed envelope. All the papers submitted for publication will be evaluated by the Journal's referees. Only those papers which receive the favourable comments will be published. For book reviews, two copies of the book should be sent to the Editor-in-Chief. All enquiries should be made to either of the following addresses:

The opinion and observation of the writers are their own and editors do not share their opinion.

Prof. N.D.R. Chandra
Dept. of English, Post Box-430
Nagaland (Central) University,
Kohima Campus, Pin-797001
Phone-03702291470, 9436604508
Email : chandra592001@yahoo.com

Prof. N.D.R. Chandra
B-19, Central Avenue
Smriti Nagar, Dist.-Durg
Chattisgarh, Pin-490020
Cell- 8839846685
Cell- 9436830377
kcchandra06@gmail.com

Website of the journal : http//www.i-scholar.in, Zindese.php/JLCMS/Index

Cheques/Money Transfer etc. are acceptable at either of the above addresses

Subscription for life member	Rs. 5000/-	(Individual)
Subscription for life member	Rs. 10000/-	(Institutional)
Subscription for 5 years	Rs. 3000/-	(Individual)
Subscription for 5 years	Rs. 5000/-	(Institutional)
Annual membership	Rs. 500/-	(Individual)
Annual membership	Rs. 1000/-	(Institutional)
Single copy	Rs. 250/-	(Individual)
Single copy	Rs. 500/-	(Institutional)

Journal of Literature, Culture & Media Studies Vol. XI & XII

CONTENTS

RESEARCH PAPERS

1. Translator as Cultural Ambassador — 5
- Basavaraj Naikar

2. Pandemic Narratives of Re-dreaming and Self-becoming: Interpreting the Condition of Indian Women — 15
- Shubha Dwivedi

3. Acceptance Of Google Meet And Google Forms for Online Teaching-Learning and Evaluation During Covid-19 Pandemic — 34
-Vikas Chandra

4. Narratives of Gendered Subalternity : A Study in V.S. Naipaul's Half- a- Life — 49
-Mithilesh K. Pandey

5. Common Man and Literature of Indian Partition — 60
-Md. Badiuzzaman

6. V.S.Naipaul : His Life, Thoughts and Art — 70
- Daisy Kumari

7. Race and Gender Marginalization in Toni Morrison's *The Bluest Eye* — 74
-Aradhana Goswami, Jamashed Ansari

8. Fiction as Alternative History: A Reading of Toni Morrison's Beloved — 80
-Vizovono Elizabeth

9. Issues of Racial Prejudice and Nostaligia in Bharati Mukherjee's *The Tiger's Daughter* — 90
-Sanket Kumar Jha

10. Thematic Analysis of Kiran Desai's *Hullabaloo In The Guava Orchard* — 102
-P.B.Teggihalli

11. Indian English Campus Novels: Degrading Morals of Indian Academics — 109
- Charvi Oli

12. Deconstruction of Gender Construction in David Levithan's *Every Day* — 116
-Atuonuo Kezieo

7. Race and Gender Marginalization in Toni Morrison's *The Bluest Eye*

Aradhana Goswami*, Jamashed Ansari**

Abstract:*The Bluest Eye is a novel that brings to discussion themes such as Identity, gender and race–establishing a dialogue with the 1960s debates over such subjects. These topics are analysed by Morrison through the novel's plot, formal devices and characters. Therefore, all of those elements are examined in the present chapter, in order to understand what the novelist may be suggesting about identity, gender and race. In the first section of this paper, discusses the novel's formal devices. Its structure and narrative voice are quite meaningful and give us an insight into what Morrison's trouble with the "Black is Beautiful" slogan may be. The formal devices seem to suggest that African American traditions are the key to achieving wholesome and healthy identities. Also central to Morrison's possible project of questioning beauty standards and the concept of beauty itself, are the characters who are oppressed by them and who also use them to oppress others. As Morrison points out in the afterword to The Bluest Eye, which was added to the novel in 1993, the book was written during the years of 1965-69, "a time of great social upheaval in the lives of black people" (P. 208). The author stresses the importance of remembering the political charged climate of the 1960s to understand some of the novel's central themes, so a few of the events that took place in that decade, as well as some that led to them, will be discussed now. What became known as the Civil Rights Movement actually refers to a series of events and mobilizations that happened in the United States throughout most of the 20th century and are rooted not only on the American Civil War of 1861–1865, but on the entire slavery process that blacks underwent while in North American ground and its aftermath. During the Reconstruction period after the end of the Civil War, African Americans vehemently claimed for their rights to vote and protested segregation in spheres such as public transportation and education. Nonetheless, a large number of white citizens, especially in the South, engaged in racial violent acts against black people, and feelings of war-weariness prevented many national political leaders from advocating African Americans' rights, in fear that they might lose*

Journal of Interdisciplinary Cycle Research

An UGC-CARE Approved Group - II Journal

An ISO : 7021 - 2008 Certified Journal

ISSN NO: 0022-1945 / web : http://jicrjournal.com / e-mail: submitjicrjournal@gmail.com

Certificate of Publication

This is to certify that the paper entitled

Certificate Id: JICR/4683

"Human Rights in India: The Constitutional Framework"

Authored by :

Dr. Ashish Kumar Pandey, Assistant Professor

From

Government Lahiri P.G. College, Chirimiri, Koriya

Has been published in

JICR JOURNAL, VOLUME XIII, ISSUE VI, JUNE- 2021

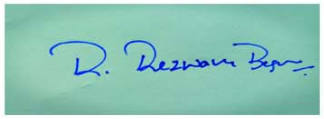

Dr. R. Rezwana Begum, Ph.D Editor-In-Chief

JICR JOURNAL

6.2 IMPACT FACTOR

ISO International Organization for Standardization 7021-2008

http://jicrjournal.com

GOVT. OF INDIA RNI NO. UPBIL/2014/56766

ISSN 2348-2397

UGC Approved
Care Listed Journal

Shodh Sarita

Certificate of Publication

Ref. No.: **SS/2021/SIS 2**

Date: **29-03-2021**

Authored by

Dr. Ashish Kumar Pandey
Assistant Professor
Department of Commerce
Government Lahiri P. G. College, Chirimiri, Koriya, C.G.

for the Research Paper titled as

IMPACT OF LABOUR WELFARE PRACTICES ON EMPLOYEES' SATISFACTION

Published in

Shodh Sarita, Volume 8, Issue 29, January to March 2021

PUBLISHED BY

sanchar
Educational & Research Foundation

Chief Editorial Office
448/119/76, Kalyanpuri, Thakurganj Chowk,
Lucknow, Uttar Pradesh - 226003
+91-94155 78129 | +91-79051 90645
serfoundation123@gmail.com | seresearchfoundation.in

Dr. Vinay Kumar Sharma
Editor in Chief
M.A., Ph. D., D.Litt. – Gold Medalist
Awarded by The President of India 'Rajbhasha Gaurav Samman'

Shodh Sarita
EDITOR IN CHIEF
DR. VINAY KUMAR SHARMA

Current Research in Pharmacology and Drug Discovery 2 (2021) 100024

Contents lists available at ScienceDirect

Current Research in Pharmacology and Drug Discovery

journal homepage: www.journals.elsevier.com/current-research-in-pharmacology-and-drug-discovery

Synthesis, molecular docking, and biological evaluation of Schiff base hybrids of 1,2,4-triazole-pyridine as dihydrofolate reductase inhibitors

D. Dewangan [a,*], Y. Vaishnav [a], A. Mishra [a], A.K. Jha [a], S. Verma [b], H. Badwaik [c]

[a] Shri Shankaracharya Technical Campus, Shri Shankaracharya Group of Institutions, Junwani, Bhilai, 490020, Chhattisgarh, India
[b] University College of Pharmacy, Pt. Deendayal Upadhyay Memorial Health Sciences and Ayush University of Chhattisgarh Raipur
[c] Rungta College of Pharmaceutical Science and Research, Bhilai, 490023, Chhattisgarh., India

ARTICLE INFO

Keywords:
1,2,4-Triazole
Schiff bases
Aromatic aldehydes
Pyridine hybrid
Dihydrofolatereductase
In-*silico* design

ABSTRACT

In this study novel derivatives of 1,2,4-triazole pyridine coupled with Schiff base were obtained in altered aromatic aldehyde and 4-((5-(pyridin-3-yl)-4H-1,2,4-triazol-3-ylthio)methyl)benzenamine reactions. Thin layer chromatography and melting point determination were employed to verify the purity of hybrid derivatives. The structures of the hybrid derivatives were interpreted using methods comprising infrared, nuclear magnetic resonance, and mass spectroscopy. The *in vitro* anti-microbial properties and minimum inhibitory concentration were determined with Gram-positive and Gram-negative bacteria. Among the derivatives produced, two derivatives comprising *(Z)-2-((4-((5-(pyridine-*3-yl*)-4H-1,2,4-triazol-3-ylthio)methyl)phenylimino)methyl)phenol*and *(Z)-2-methoxy-5-((4-((5-(pyridine-*3-yl*)-4H-1,2,4-triazol-3- ylthio)methyl)phenylimino)methyl)phenol* obtained promising results as antibacterial agents. After synthesizing different derivatives, docking studies were performed and the scores range from −10.3154 to −12.962 kcal/mol.

1. Introduction

The preparation of 1,2,4-triazole and its biotic evaluation have facilitated the development of novel potent triazole derivatives (Chen et al., 2008; Bayrak et al., 2010; Agarwal et al., 2011). The established analogs of 1,2,4-triazole with diverse pharmacological properties, including analgesic, anti-inflammatory, anticancer, antihypertensive, anticonvulsant, and antiviral activities, have attracted much attention (Tozkoparan et al., 2007; Mhasalkar et al., 1970; Przegalinski and Lewandowska, 1979; Langley and Clissold, 1988; Kelley et al., 1995; Kumar et al., 2010; El-Nassan, 2011; El Sayed Aly et al., 2015; Hassan et al., 2020; Pagniez et al., 2020; Aly et al., 2020). Hybrids were obtained with a substituted benzyl group where, 5-mercapto-3-pyridyl-1,2,4-triazole was reacted to link the 1,2,4-triazole moiety with a pyridine ring. These hybrids of 1,2,4-triazole pyridine were shown to be active against Gram-negative and Gram-positive-bacteria. In particular, good activities against Gram-negative and Gram-positive bacteria were determined for the derivatives *3-(5-(2-bromobenzylthio)-4H-1,2,4-triazol-*3-yl*)pyridine* and *3-(5-(2,4-dibromobenzylthio)-4H-1,2,4-triazol-*3-yl*)pyridine*; in our previous study (Ahirwar et al., 2018).

Previous studies have also shown that Schiff bases have a broad range of biotic properties, including anticancer, antioxidant, and anti-inflammatory, activities (Nadia et al., 2017; Yasemin et al., 2016). Therefore, we hypothesized that including Schiff bases in hybrids with 1,2,4-triazole pyridine might allow the synthesis of derivatives with improved biological activities. Thus, the main aims of the present study were to obtain a novel bioactive series of 1,2,4-triazole Schiff bases with hybrids of pyridine and to assess their potential biotic activities.

As part of our ongoing research into hybrids derivatives, we synthesized a series of novel 1,2,4-triazole, and pyridine hybrids combined together with Schiff bases by reacting 4-((5-(pyridin-3-yl)-4H-1,2,4-triazol-3-ylthio)methyl)benzenamine with different aromatic aldehydes to produce potent antimicrobial derivatives. *In-silico* investigations against dihydrofolate reductase(DHFR) were also performed to verify the antimicrobial activities. The residual interaction of the ligand with the receptor was visualized using DiscoveryStudiosoftware.

1.1. Experimental

Melting point determination was performed using an open capillary procedure followed by thin layer chromatography to check the purity of the compounds obtained (Dewangan et al., 2010, 2011).Fourier

* Corresponding author. Department of Pharmaceutical Chemistry, Shri Shankaracharya Technical Campus, Shri Shankaracharya Group of Institutions, Junwani, Bhilai, 490020, Chhattisgarh, India
E-mail address: danu_drugs@yahoo.com (D. Dewangan).

https://doi.org/10.1016/j.crphar.2021.100024
Received 30 December 2020; Received in revised form 31 March 2021; Accepted 31 March 2021
2590-2571/© 2021 The Author(s). Published by Elsevier B.V. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (http://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/).

Scanned by CamScanner